११

वैद्यामृतम् ~~with commentary~~ of
मोरेश्वर भट्ट with the commentary in
old Hindi By रमानाथ भट्ट - Ed.
and pub. by बाबू वाराणसी प्रसाद at
काशी संस्कृत प्रेस. Lithoprint edn.,
Benares, 1924 Vikram era

[redacted]

(30)

Bill No. 3 /07-08

197.

2008-03 64

वैद्यामृतम्

श्री ३ युतरमानाथभट्टविरचि
तप्राकृतविवरणेनसंयुतम्
काश्यांत्रिपुरभैरवीसन्नि
धौश्री ३ युतबाबूफतह
नारायणसिंहजीत्य
भिधायुजोनिकेत
नेकाशीसंस्कृतमु
द्रायन्त्रेअङ्कितम्।
सम्वत् १९२५

श्रीगणेशायनमः॥ सूचनाकहैंग्रंथमों जोअनुक्तार्थहैउसका कथनकरना॥ सोइहाँअनुक्तार्थसूचन छप्रकारकाहै॥ यथा॥ युक्तायुक्तविचार॥ १॥ औषधलेनेकाकाल॥ २॥ औषधप्रतिनिधि॥ ३॥ औषधादिकोंकापरिमाण॥ ४॥ क्काथादिप्रक्रिया॥ ५॥ स्नेहपाक॥ ६॥

युक्तायुक्तविचारोयथा

सर्वकार्यमोनूतनऔषधोंकीयोजनाकरना परंतु विनाविडंग कृष्णाभ्यांगुड धान्याज्यमाक्षिकैः इसवचनसे बाविडंग। पीपर। गुड। धनिया। घृत। सहत इन औषधोंको छोडके। यह ६ पदार्थ एकवर्षकापुरानालेना॥ और क्काथादिसकलकर्ममो। शुष्कंनवीनंद्रव्यंचयोज्यंसकलकर्मसु आर्द्रंच द्विगुणंयुंज्यात्एषसर्वत्रनिश्चयः। इसवचनसे शुष्कद्रव्य जोहैसोनूतनहीलेना औरआर्द्रद्रव्यहोयतोउस्से द्विगुण लेना यह प्राप्तहोताहै परंतु गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडश्च शतावरी। अश्वगंधासहचरीशतपुष्पाप्रसारिणी। प्रयोक्त व्यासदैवार्द्रा द्विगुणानैवकारयेत्। इसवचनसे। गुरुच। कुटज। अडूसा। कूष्मांड। सतावर। असगंध। कटसरैया। बडीसौंफ। प्रसारिणी। इस्कानामचांदवेल। गंधमदाली भीकहतेहैं। तस्मात्यहचीज आर्द्रहीलेना द्विगुणनहीलेना और जिस औषधीका अंगनहीलिखाउस्का मूललेना चाहिये॥

औषधलेनेकाकाल

मनुष्यको औषध लेनेकापाँचकालहै॥ किंचित्सूर्योदय होते औषधलेना सोप्रथमकाल। भोजनकेसमय औषधलेना

यहद्वितीयकाल. सायंकालमो भोजनसमयमो लेनासोतृ
तीयकाल। औरवारंवार औषध लेनायह चतुर्थकाल।
रातको औषधलेना यह पंचमेकाल। इसप्रकारसेपांच
कालऔषधलेनेकाहैं॥ अबकौन औषधकिस काल
मे लेना सो कहते हैं॥ पित्तप्रकोप औरकफप्रकोपहोने
सेपित्तकोविरेचनकफकोवमनदेनाहोय तोप्रातःका
लमोदेना रोगी को भोजनप्रातःकालनहीदेना॥ औरगुद
संबंधीवायू क्रुद्ध भयाहोयतो भोजनकेपूर्व औषधले
को भोजनकर्ना॥ मुखको अरुचि केवास्ते औषधखा
नाहोयतो भोजनकेबरोबर औषध खाना॥ अग्नि
मंदभयाहोयतो औषध भोजनकिंचित्करकोबीच
मोखाना। नाभिस्थानकावायू। कुपित भयाहोयतो भो
जनांतमे औषधखाना। हिक्का आक्षेपकवायू औरकं
पवायू इसपरऔषधखानाहोयतो भोजनपूर्व और
भोजनांतमेखाना। कंठस्थवायू कुपितहोय को स्वरभे
दहोजाय तो सायंकालकेभोजनसमयमे प्रतिग्रास
किंवाएकग्रासअंतरदेकोचूर्णादि औषधखाना। हृद
यस्थवायू क्रुद्धहोयतो सायंकालकेभोजनांतमे औष
धीखाना। तृषा। व। वमन। व। हिक्का। व। दमा। व। विष
दोष। केवास्ते औषधखानाहोयतो वारंवार अथवाभो
जनकेसमय अथवा भोजनकेपूर्वऔरभोजनांतमेसे
वनकरना

औषधलेनेकाकाल

कर्णरोगनेत्ररोग। शिरोरोग। नासारोग इत्यादिकेनिमि

त्त जो औषध खाना होय और वातादि दोषके वास्ते जो खाना होय। और क्षीण रोगके पाचन शमन रूप औषध लेना होय तो भोजनके पूर्वमे और भोजनके अंतमे औषध सेवन करना॥

औषधप्रतिनिधि

कषाय चूर्ण इत्यादि योगोंमे जो औषधी अप्राप्य है उस्के जगे उस्के समान गुण दूसरी औषधी देना। जैसा अतिविखके जगे नागरमोथा अमिलुवेतके जगे चुक कस्तूरीके जगे जायपत्री देना इस्का विस्तार चरक सुश्रुत निघंट प्रकाशादि बडे ग्रंथोमे देखलेना॥

औषधादिकोंका मान

जहां कषायादि योगोंमे औषधीका प्रमाण नही लिखा वहां सर्व औषध समान लेना समान भी कितना लेना ऐसा कहो तो जंहा द्रव्य का अंगरस कहा है तहां अंगरस की मात्रा दो तोले २ लेना अंगरसके माने कषायादिकमे जहां मिस्री अथवा सहत। वा। गुड इत्यादि द्रव्य उपरसे मिलायके पीना ऐसा है तहां छ छ मासे ६ देना। और जहां पुट पाककी मात्रा है तहां ४ तोले लेना उसमे मिस्री वगैरे देना होय तो तोले तोले देना और कल्क चूर्णादिक उपरसे देना होय तो स्वरस प्रमाण छ छ मासे ६ देना यह संक्षेपसे कहा है विस्तार चरकादिक ग्रंथोमे जानना॥

क्वाथादिप्रक्रिया

कषाय। कषायमेकी सब औषधी मिलके रोज ४ तोले लेके कूटना और १६ पल पानी के माने ६४ तोले पानी दे

कोहांडीमे आगपरचढाय देना मंदआंचसेजब चुरजाय औरअष्टमांश आठतोले २ रहेतबईषदुष्ण वह कषायपीना इतना प्रकृती कीनमहे तो तोले ४ पीना लडकेको तीन ३ मासेसे एक तोले तक देना। उस कषायमो मिस्री मिलावना होय तो वातपित्तकफ इनरोगोंपरक्रमसे चौथा आठवा सोलवा हिस्सा मिलावना। औरसहत मिलावना होय तो कफपर चौथा हिस्सा पित्तपर आठवा हिस्सा वातपर सोलहवां अंश देना। औरजीरा। गुग्गुल। क्षार। शिलाजित। हींग। वगैरे औषध देना होय उपरसे तीन ३ मासे देना। दूध। घृत। तेल। गुड कल्क चूर्ण वगैरे देना होय तो कषायमो तोले २ देना। फांट। वा। हिम। इनका भी प्रमाण। वउसमे उपरसे द्रव्य मिलावनेका भी प्रमाण कषायतुल्य जानना। कल्क।। आर्द्र अथवा शुष्क द्रव्य सिलपर पीसको गोला बनाना उसको कल्क कहते है।। उसका प्रमाण तोला १ उसमे सहत घृत तैल मिलावना होय तो कल्कके दूना मिलावना। चीनी। वा। गुड मिलावना होय तो वरोबर देना। और कोई द्रव्य मिलावना होय तो कल्कसे चौगुन मिलावना इति कल्कः।।

१ फांटके माने द्रव्य कूटको गरम पानीमे डालको उसीवक्त छान लेना १ हिमके माने द्रव्य कूटको पुरवेमे डालको पानीसे भरको रात भर रखना सबेरे छान लेना

अथ चूर्णप्रक्रिया

अत्यंत सूखी दवा लेको कूटको वस्त्रगालित करना उसको चूर्ण कहते है।। वह चूर्ण बडेको छ ६ मासेसे तोले एक रोग तारतम्य देखको देना। चूर्णमे गुड देना होय तो स

मभाग देना। वा चीनी देना होय तो दूना देना। हींग भर्जित देना। घृत। वा सहत। इत्यादि देना हो तो चूर्णका दूना लेना। जल मे चूर्ण लेना हो तो जल चौगुना लेना। चूर्ण। अवलेह गुटिका कल्क इन्के पीछे से जल। वा। दूध पीना हो तो वात। पित्त। कफ। रोगों पर क्रमसे वातरोग पर १२ तोले पित्त पर ८ तोले कफपर ४ तोले पीना। जैसा जल के ऊपर तैलबिंदु गिरने से फैल जाता है तैसा अनुपान के जोर से औषध सर्वांग मे फैल जाता है। किसी चूर्ण को नीबू वगैरे रस की भावना देना हो तो जितने रसमे सब चूर्ण भिंजे वही भावना का प्रमाण जानना। जो भी कषायादि का प्रमाण लिखा है तो भी देश। काल। प्रकृति। वय। अग्नि। बल इत्यादि को का विचार करको उक्त औषधों की योजना करना॥

स्नेहपाक

कल्क से चौगुना घृत अथवा तैल लेको उस्के चौगुना जल अथवा द्वितीय द्रव पदार्थ देको सिझावना। फेर जब सिद्ध होजाय तब उस स्नेह की मात्रा ४ तोले रखाना। जिस द्रव्य का तैल अथवा घृत निकालना हो तो उस द्रव्य के चौगुन जल देको चतुर्थांश अवशिष्ट रखना उस्के बराबर तैल अथवा घृत सिद्ध करना। मृदु द्रव्य हो तो जल चौगुन देना। कठिन द्रव्य हो तो आठगुन जल देना। अत्यंत कठिन द्रव्य हो तो सोलहगुना जल देना। जहाँ केवल कषाय। और स्वरस इस्से स्नेह तैयार करना हो तो कल्क का अंश क्रमसे चौथा। आठवा। सोलहवा देना। दूध। दही। स्वरस। तक्र इस्से स्नेह सिद्ध करना हो तो आठवा अंश कल्क का योजना करना। और कल्क

कापाकसुंदरहोय इसलिये चौगुनापानीदेना। जँहाँ कषायसे स्नेहसिद्धकरनोहै तँहाँकषायकेद्रव्योंकाक ल्कदेकोसिद्धकरना। जँहाँ दूधसे स्नेह करनाहोय तँहाँ द्रव्यके आठगुन दूध औरदूधके चौगुन पानी देको सिझावना। स्नेहतैयारहोजायतबएकबिंदू आगुपर देको देखकर जबतडतडायजायतबजानना कि स्नेहसिद्ध भया। तैल तैयारकरके जब फेनआवनेलगे तबतैल तैयारहुआ ऐसा जानना घृततैयारकरते जबफेनआयकोनष्टहोजायतबघृत भयाऐसा जानना। इतिस्नेहपाकपरिभाषा पारा गंधकादिककाशोधनशार्ङ्गधरादिग्रंथमोदेखलेना॥

तत्रादौ मंगलाचरणं

नत्वा गुरुं स्वेष्टदेवं चरकादिमुनींस्तथा ॥ वैद्यामृतस्य संक्षेपात् भाषाटीकां करोम्यहं ॥१॥ ॥ दोहा ॥ करि प्रणम गुरु देव को चरकादिक मुनि मान ॥ भाषाटीका करतु हो वैद्यामृत की जान ॥२॥

सूचना

थोडे दिनों से संस्कृत का पठन पाठन न्यून होने से किसी को संस्कृत का अभ्यास रहता है किसी को नही रहता इसलिये श्री काशीजी मे श्री पंडित ठाकुरदत्तजी तथा श्री बाबू बनारसीप्रसादजी के आज्ञानुसार वैद्याग्रगण्य श्री मोरेश्वर भट्ट कृत वैद्यामृत नामक जो ग्रंथ है उस्का खडीबोली मो भाषाटीका किया जाता है जिस्मे सर्व देश के लोक देखको इस ग्रंथ का मतलब समझे और अति हर्षित होवे ॥

तत्रादौ मंगलाचरणं

अर्थ ॥ इस वैद्यामृत ग्रंथ मे प्रथम मोरेश्वर भट्ट निर्विघ्न से ग्रंथ समाप्त होय इसलिये ब्रह्मा आदि देवता को नमस्कार करते है

श्लोकः

नत्वा ब्रह्म महेशविष्णुगिरिजानागास्यधन्वंतरीन् पूज्यान् सुश्रुतवाग्भटप्रभृतिकान् सर्वांश्च वैद्यान् गुरून् ॥ श्रीमन्माणिकभट्टवैद्यतनयो मोरेश्वराख्यो भिषक् नानावैद्यमतं विलोक्य कुरुते वैद्यामृतं सुंदरं ॥२॥

टीका

ब्रह्मा ॥ विष्णु ॥ शिव ॥ पार्वती ॥ गणेश ॥ धन्वंतरी ॥ और वैद्य

शास्त्रके आचार्य सुश्रुत वाग्भट चरक आदि करको
जोहै और जो भच्छे अच्छे वैद्य हैं उन्को नमस्कार करको
हम माणिकभट्ट वैद्य के पुत्र जो मोरेश्वर नामक वैद्य है सो
नाना वैद्योंके मत देखके वैद्यामृत नामक ग्रंथ करते है॥

मूल

आत्रेय पाराशर सुश्रुताद्यैर्ये निर्मिता ग्रंथनृपाः प्रसिद्धाः
॥ स्वयोग्य कार्य प्रविधानदक्षोयं थोस्तु मे सेवक एव ते
षां॥२॥

टीका

अब ग्रंथकार कहते हैं कि यद्यपि आत्रेयसंहिता पाराश
रसंहिता सुश्रुत चरकादिक श्रेष्ठ ग्रंथ है उन्के आगे यह वै
द्यामृत ग्रंथ क्या है तथापि अपने २ योग्यतानुसार कार्य
करने मे सब समर्थ होते है जैसा राजा जाके लायक राजा क
रसकता है और सेवक लायक सेवक भी करसकता है
उसी तरसे हमारा यह ग्रंथ चरकादिक ग्रंथों का सेवक
ही होय॥

मूल

यद्यप्यनार्यमिदमस्ति वचो मदीयं वैद्यास्तथापि भवतां
हितहेतुरेव॥ यस्मादमुष्य करणे करणं मदीयः श्रीमत्स
दाशिवपदांबुज भक्तियोगः॥३॥

टीका

यद्यपि यह पूर्वोक्त वाक्य हमारा अश्रेष्ठ है तथापि हे वैद्य
लोगों आपको यह ग्रंथ हितकारक ही होगा क्योंकि इस
ग्रंथ करने मे श्रीमत्सदाशिव चरणारविंदकी भक्ति

हायहैइसमेसंदेहनहीकरना॥३॥

मूल

शास्त्रप्रवीणाःक्रिययाविहीनाःक्रियाप्रवीणाःकिलशास्त्रहीनाः॥एतादृशायद्यपिसंतिकिंतैर्वैद्यास्तएवोभयथाप्रवीणाः॥४॥

टीका

जोवैद्यशास्त्रमेनिपुणहैऔरक्रियाऔषधौंकीनहीजानते अथवावैद्योकेसंबंधसेकेवलऔषधादिकक्रियामेकुशलहैपरंतुशास्त्रकरकोहीनहैऐसे २ जोवैद्यहोयतोउन्सेकुछफायदानही चिकित्साउन्कीकभीनहीकरना जोशास्त्रमे औरक्रियामेनिपुणहैउसीकोवैद्यजानना॥४॥

मूल

समस्तामयमुख्यत्वाज्ज्वरस्यप्रथमंमया॥प्रतीकारःसुधातुल्योयथामतिनिगद्यते॥५॥

टीका

संपूर्णरोगोमेप्रधानज्वरकोलिखाहैइसवास्तेप्रथमतःहमभीज्वरकानिवृत्सुपायअमृततुल्यकहतेहै॥५॥

मूल

वातज्वरंहंतियवासविश्वामुस्तागुडूचीजनितःकषायः॥पित्तज्वरंहंतिरजःकषायश्छिन्नाशिवापर्पटजोथवापि॥६॥

टीका

धमासा।सौंठबेतरा।नागरमोथा।गुडुच। इनचारौंवस्तुसमले कोमूखीकाथादिकषक्रियासेकाढाकरकोदे

नाइससेवातज्वरदूरहोताहै॥ और पित्तपापडाकेकषाय सेपित्तज्वरजाताहै अथवा गुडुच। छोटीहरे। पित्तपापडा इनतीनोंकी। जका कषाय भी पित्तज्वरको नाशकरताहै ॥ ६॥

मूल

शार्ङ्गीपुष्करदेवदारुमगधाछिन्नावृषाब्दौषधैःक्वाथोयंकफजज्वरंकसनकंसश्वासपार्श्वग्रहं॥ मांद्यंजाठरवन्हिजातमरुचिंनिर्मूलयत्येवसत्सक्वान्नंक्षुधितोयथातरुगणानूझंझामरुद्वायथा॥७॥

टीका

कफज्वरपरकषाय॥ भारंगमूल। पुष्करमूल। देवदार। पीपर। गुडुच। अडूसेकापत्ता। नागरमोथा। सोंठ इनका पूर्वोक्तप्रकारसे कषाय करकेपीनेसे कफज्वर। खांशी श्वाससहित पार्श्वभागकीपीडा। अग्निमांद्य। अरुचि इत्यादिकरोगनष्टहोतेहैं जैसा कोई क्षुधितपुरुष पक्कान्नको निर्मूलकरताहै तैसा और जैसा पानी केसाथ बडी आंधीआवनेसे बडे २ वृक्ष उखड जातेहैं वैसा ही यह कषाय इनसबरोगोंको उखाडकेफेकताहै॥७॥

वातपित्तज्वरचिकित्सा

किराततनागरामृतारजोब्दसंशृतंजलं॥ निहंतिवातपित्तजंज्वरंयथागजंहरिः॥८॥

टीका

अबवातपित्तज्वरकाउपाय। चिरायता। सोंठ। गुडुच। पित्तपापडा। नागरमोथा। इन औषधोंकाकाढावातपित्तज्वरकोनाशकरताहै॥ जैसासिंहगजकोनाशकरताहैवैसे ६

मूलम्

आरग्वधाभयातिक्ताग्रंथिकाब्दशृतंपिबेत्॥ कफवातज्वरेसामेंशूलेदीपनपाचनं॥९॥

टीका

अमलतास कागुद्दा। छोटीहरे। कुटकी। पीपरामूल। नागरमोथा। इनऔषधोंकाकषायकफवातज्वरआमशूलकोदूरकरताहै॥ और अग्निप्रदीप्तकरताहै॥ औरपाचनसामर्थ्यहोताहै॥९॥

मूलम्

रक्तचंदनधनामृतवल्लीनिंबपद्मकभवंक्वथितंस्यात्। आशुपित्तकफजज्वरतृष्णादाहवातहरमग्निकरंच १०

टीका

लालचंदन। धनियाँ। गुडुच। नीबकीछाल। पद्मकाष्ठ। इनुपाँचोंचीजकाकाढापीनेसेपित्तज्वरकफज्वरतृष्णादाह। वायूइन्कोनाशकरताहै। औरअग्निकोप्रदीप्तकरताहै॥१०॥

अथसाधारणज्वरचिकित्सा

कलिंगशुंठीघनतिक्ततिक्तानिंबामृताधान्ययजोन्वितानां॥ सरिंगिणीपुष्करचंदनानांपटोलभार्गीवृषपद्मकानां॥११॥ कषायकः कासवमीपिपासादाहान्वितेचाष्टविधज्वरार्ते॥ सजंतुरोगेरुचिकामलार्तेदोषत्रयार्तेगदितोमुनींद्रैः॥१२॥

टीका

इंद्रजव। सोंठ। नागरमोथा। चिरायता। कुटकी। नींबका

पत्र। गुडुच। धनियाँ। पित्तपापड़ा। भटकटैया। पुष्करमूल। रक्तचंदन। कटुपटोल। भारंगमूल। अडूसे कापत्ता। पद्मकाष्ट। इनसोलहकीजकाकषायपीनेसेखांसी। वांति। प्यास। दाह। अष्टप्रकारज्वर। कृमिरोग। अरुचि। कामला। संनिपात। यहसबरोगदूरहोतेहैं॥२२॥

अथसन्निपातज्वरचिकित्सा

तिक्तापद्मकतोयचंदनधनावासाभयारग्वधैःपाठविश्व कलिंगकामृतलतामुस्तैःकषायःकृतः॥कृष्णाचूर्णयुतस्त्रिदोषजनितेविष्टंभदाहान्विनेकासश्वासविलापतृड्युतहितःसंदीपनःपाचनः॥२३॥

टीका

कुटकी। पद्मकाष्ट। वाला। रक्तचंदन। धनियाँ। अडूसेकापत्ता। छोटीहर। धनबहेडेकागुद्दा। पाठा। सोँठ। इंद्रजव। गुडुच। नागरमोथा। इनतेरहवस्तूकाकषायकरकेपीपरकीबुकनीउस्मेदेकोदेना उस्सेपेटफूलना। दाह। खाँसी। श्वास। ज्वरमेबकना। तृषा इनकरकेयुक्त जोसन्निपातज्वरसोदूरहोगा॥ औरअग्निप्रदीप्तकरेपाचनकरे॥ यहअत्युत्तमकषायहै॥२३॥

मूलम्

शुंठीदारुशठीरजोबृहतिकातिक्ताकिरातांबुदानंताभिर्जनितःकषायकवरःकृष्णामधुभ्यांयुतः॥निःशेषंत्रिनयोद्भवज्वरहरोजीर्णज्वरस्यांतकृत्कासारिर्विषमापहोपिगदितःशुंठ्यादिकःसूरिभिः॥२४॥

टीका

सोंठ। देवदार। कचूर। पित्तपापड़ा। भटकटैया। कुटकी। चिरायता। नागरमोथा। धमासा। यह नव औषधीका काढा करको छोटीपीपरकी बुकनी और सहत काढे मे देको सीरगरम पीना सन्निपात ज्वर जीर्ण ज्वर खाँसी विषमज्वर दूर होगा ॥२४॥

मूलम्

शांते त्रिदोषे श्रुतिमूलजातशोथस्त्वरक्तं प्रविमोचयेत्प्राक् ॥ पश्चान्मुहुः कटूफल कृष्णजीरविश्वा कुलित्थोद्भवलेपनं स्यात् ॥२५॥

टीका

सन्निपात ज्वर के अंत मे जो कर्णमूल मे जो सूज आवै तो उसके पहिले जोंक लगावना ॥ फेर कायफल। कालीजीरा। सोंठ। कुलित्थ। इस औषध का लेप करना इस्से सूज जाती रहेगी २५

अथ विषमज्वरचिकित्सा

पटोलमधुकाभयाकटुकरोहिणीमुस्तजः कषायकवरः परं विषममाशु जेजीयते ॥ तथा वृषपयोधरामृतलताशिवाविश्वजं कणामधुयुतं श्रृतं विषमनाशनं कीर्तितं ॥२६॥

टीका

पटोल। महुआका फूल। छोटी हरे। कुटकी। नागरमोथा। इन औषधों का काढा कर को ईषदुष्ण लेने से विषम ज्वर दूर होता है। उसी तरे से अडूसे का पत्र। नागरमोथा। गुडुच। छोटी हरे। सोंठ इन औषधों को कषाय करको सहत और पीपर की बुकनी उस्मे डाल को पीना विषम ज्वर दूर होता है ॥२६

साधारणज्वरचिकित्सा

यवसर्षपरुक्शिवावचाजतुनिंबाज्यभवंप्रधूपनं॥ज्वरनाशकरंपरंस्मृतं विविधोपायकरैश्चिकित्सकैः॥१७

टीका

धूप॥यव।सरसों।कुट।छोटीहरे।बच।लाह।नींबकीपत्ती।घृत।इनऔषधोंका धूपदेनेसे सर्वज्वरदूरहोताहै

मूलम्

अमलसैंधवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदंज्वरहारि॥रोचनदीपनपाचनमाशुभेदितथागदितंमुनिवर्यैः॥१८॥

टीका

चूर्ण॥अंवरा।सैंधव।चीता।छोटीहरे।पीपर।यहपांचऔषधका चूर्णखानेसेसर्वज्वरनष्टहोताहै औरअग्निप्रदीप्तहोताहै जिव्हाकोरुचिहोतीहै मलशुद्धिहोतीहै यहचूर्णऋषियोंनेकहाहै अत्युत्तमगुणकारकहै॥१८॥

जीर्णज्वरचिकित्सा

जलचतुःपलयुक्तपयःपलेशृतकणात्रयमग्निकरंपरं॥श्वसनकासवलासपुरातनज्वरहरंरुचिदंबलवर्द्धनं॥१९॥

टीका

छोटीपीपर३तोला।जलतोले१६।दूधगौका तोला४।जलदूधएकत्रकरकोउसमेंपीपरछोडदेना बादकाढाकरना जबपानीजलजायतबपीपरनिकालडालना औरउसी४तोलेदूधकोपीनाउसमेजीर्णज्वर।श्वास।

कास। कफ। यह रोग दूर होगा जलदी से। अग्निप्रदीप्त होता है रुचि हो य बलकी वृद्धि करे॥२९॥

जीर्णज्वरचिकित्सा

एकांशो मरिचाद्भौ रसकतः संमर्द्य सम्यक्सृणे पञ्चाग्निं बुरसेन मर्दन विधिर्यावत् घृतं गच्छति। पथ्यं दुग्धयुतं कणामधुयुतो वल्लप्रमाणो भवेत् प्राचीन ज्वरहा तथा विषमहा धातुस्थितध्वंसनः॥२०॥ रक्तातीसृतिवायुजप्रदरहा नेत्रामयध्वंसनो यावद्रक्तभवामयप्रहरणः पित्तामयध्वंसनः॥ रोगानीकगलग्रहो विजयते श्री मालिनिभागयं वैद्यानां मतिशालिनां बहुतरं श्रीदो वसंताभिधः॥२१

टीका

लघुमालिनीवसंतरसः॥ ॥ मिरिच शुद्ध किया हुआ सफेद भाग १ खपरिया गोमूत्रमे शोधित भाग २। इन दोनो औषधौंको गोके मखनमो अंदाज पैसे भर मो खलकरना। फेर कागदीनीबूके रसमो खलना जबतक उस्की चिकनई जाय बाद उस्की गोली तीन गुंजाप्रमाण बांधना उस गोलीको सहत पीपरके साथ खानेसे जीर्णज्वर विषमज्वर धातुगतज्वर। रक्तातीसार। अर्शमाने बबेसी। प्रदर। नेत्ररोग। ये सब दूर होते है। उसी तरेसे रक्तजन्य। पित्तजन्य रोग दूर होता है। यह लघुमालिनी वसंतरस वैद्य को यश देनेवाली द्रव्य देनेवाली है रोगमात्रको नाशकर्ता है॥ पथ्य दूधभात खाना॥२०॥२१॥

ज्वरातिसारचिकित्सा

इसबगोलद्रुति प्रथितं जनेहरतित ज्ज्वर भाजमती सृतिं।

अनुभवाल्लिखितंनतुशास्त्रतो भवतु तद्भिषजामुपयोगिकं॥२२॥

टीका

इसबगोल औषधी कोरातको भिजोयदे नासबेरेहातसेमीसकोमिश्री मिलायकोखाना इस्से ज्वरातिसारबंदहोताहैइसऔषधीकोग्रंथकारकहतेहैंकिहमं अनुभवसोलिखाहै शास्त्रसे नहीलिखतेहै॥२२॥

मूलम्

विश्वामृतावालकचंदनानांसवत्सकांभोदकिरातकानां॥ हितःकषायोवमिदाहतृष्णाशोफातिसारज्वरपीडितानां २३

टीका

सोंठ।गुडुच।खस।रक्तचंदन।कुटकीछाल।नागरमोथा।चिरायता।इन्का कषाय छर्दि।दाह।तृष्णा।सूज।अतिसार।ज्वरइन्को नाशकरताहै॥२३॥

अतिसारचिकित्सा

पाठाबिल्वंधातकीवत्सकौबुमुस्तंरोधंचंदनंदाडिमंच॥ क्षौद्रोदिक्तंक्काथमेतंवदंतिपिच्छास्त्रावेशूलरक्तामयुक्ते॥२४॥

टीका

पाठा।बेलकागूदा।धवकाफूल।कुटजवृक्षकीछाल।खस।नागरमोथा।लोध।लालचंदन।अनारकाछिकुला।इन्काकषायकरकोसहतदेकोपीनाइस्से।आंव।शूल।रक्तअतीसारजाताहै॥२४॥

मूलम्

किंचिद्घृताक्तौषधचूर्णमेतदेरंडपत्रावृतमग्निपक्कं॥सिता समंहंतिबलेऽग्निचैतदामातिसारंजठरानलंच॥२५॥

टीका

सोंठकाचूर्णकरकोकिंचितघृतसेयुक्तकरकोगोलाकर कोऔररेंडकेपत्तेमेरखकोबाँधनाकुवरसेकपडमट्टीकर कोअग्निपक्ककरना।बादउसकोनिकालकरकोपुरानीची नीकेसाथवहचूर्णतीनमासा।वा।छमासेखानाइससेआ मातिसारदूरहोताहैऔरअग्निप्रदीप्तहोताहै॥२५॥

मूलम्

समोचसारंसहनागफेनंसजातिसस्यंपुटपाकयोगात्॥नि हंतिमालूरफलंनराणांसर्वातिसारानतुभूतमेतत्॥२६॥

टीका

बिल्वपुटपाक॥ ॥मोचरस१अफीम।जायफल।को मलबिल्वफलकागुद्दा।यहचारऔषधीकोखलकरके उक्तप्रकारसेपुटपाककरकोखानेसेसंपूर्णअतिसारको नाशकरताहै।यहअनुभूतहै॥२६॥

मूलम्

कीटनिष्ठीवनेघृष्टंनागफेनंसकुंकुमं॥तंदुलंप्रमितंदत्त मतीसारनिषूदनं॥२७॥इदंमयागुरोर्लब्धंनतुशास्त्राद्भि षग्वराः॥भवतामुपयोगायगुरुतत्त्वंप्रकाशितं॥२८॥

टीका

अफीम।केसर।सहतमोघसकोचावलबराबरदेनाउससेसं पूर्णअतिसारनष्टहोताहै।हेवैद्यमहाराजयहऔषधहम नेगुरुकेसे[illegible]ब्धकियाहैतुमलोगोंकेउपयोगमें

आवेइसलियेगुरुतत्वप्रकटकिया शास्त्रमोकहींलिखानहींहेयहभीअनुभूतहै ॥२७॥२८॥

अथसंग्रहणीचिकित्सा

गुडूच्यतिविषामुस्तानागरैः क्वथितंजलं॥ मंदानलामसंयुक्ते हितंसंग्रहणीगदे॥२९॥

टीका

गुडुच। अतिविख। नागरमोथा। सोंठ। इन्काकाढाकरकेपीनेसे अग्निमांद्य। वा आमइसकरकोयुक्तजोसंग्रहणीरोगसोदूरहोताहे॥ २९॥

कनकसुंदररस

मरिचहिंगुलगंधकटंकणामृतकणाकनकोद्भवबीजकैः॥ प्रहरयोर्द्वितयावधिखल्वकेतनुतरंविजयारसमर्दितैः॥३०॥ कनकसुंदरएषमहारसोहरतिसंग्रहणीगदमुत्कटं॥ ज्वरमतीसृतिमग्निविहीनतांबतयथागरुडोभुजगावलिं॥३१॥

टीका

मिरिच। हिंगुलशुद्ध। गंधकशुद्ध। सुहागाकीलाही। शुद्धबच्चनाग। धतूरेकाबीया इनऔषधोकोभांगकेकषायमोदोप्रहरखलकरनायहकनकसुंदरनामकरसहोताहै इस्कोअनुपानकीयोजनाकरकेदेननेसंग्रहणी। ज्वर। अतीसार। अग्निमांद्य। इस्कोनष्टकरताहे जैसासर्पसमूहकोअकेलागरुडनाशकर्ताहैतैसा॥

मूलम्

त्रिजातकव्योषवरारसेंद्रगंधाजमोदाशिशिवेल्लुरा

त्र्यः॥ बिल्वानलाज्याजीरलवंगधान्यगजोपकुल्यामधुकंपटूनि॥ ३२॥ हिंगूकुबेराव्हयमोचसारौक्षारौजया सर्वचतुर्थभागाः॥ इदंहिचूर्णं विनिहंति तूर्णंप्रसूतिकासंग्रहणीविकारं॥ ३३॥ समस्तरोगांतकमग्निकारीभ्राजिष्णुताकारिसुतक्रपीतं॥ इमंप्रयोगंवहुधानुभूतंचकारधात्रीकिललकापिलाही॥ ३४॥

टीका

लाहीचूर्ण॥ ॥ इलायची। दालचीनी। तमालपत्र। सोंठ। मिरिच। पीपल। हरा। आँवरा। वहेडा। शुद्धपारा। गंधकशुद्ध। अजवाइन। सौंफ। बाविडंग। हरदी। वेलकागूदा। चीताकामूल। जीरा। लवंग। धनिया। गजपिप्पली जेठीमद। पंचलवण। शुद्धहींग। जमालगोटेकीमज्जा शाल्मलीनिर्यास। सज्जीखार। जवाखार इनसबऔषधोंकाचतुर्थभाग शोधितभाँगलेना फेरसबऔषधोंकाकपडछानपृथक्२करकेएकजगेकरना फेरमठाकेसाथइसचूर्णकोखाना इस्से प्रसूत। संग्रहणी। अग्निमांद्यइत्यादिकसंपूर्णरोगनाशहोताहै यहप्रयोगकोईलाहीनामकीदाईथीउन्होनेवहुतवेरअनुभवकियाथा इस्सेइसचूर्णकानामलाहीचूर्णऐसाकहतेहैं॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥

अर्शचिकित्सा

शुष्कसूरणहुताशनाभयानागरोषणगुडोद्भवावटी॥ अश्ववेदशशिभूतदर्धकंशक्रभागसहितारुचिप्रदा॥ ३३॥ अग्निमांद्यगुदजार्तिहारिणीविड्विबंधजठरा

र्तिनाशिनी॥आर्द्रपीलुफलभक्षणं तथार्शःकृमिग्रहणि गुल्मनाशनं॥३६

टीका.

सूरणवरी॥सूरनतोले ८ चित्रकमूलतोले ४ छोटीहरे तोले १ सोंठतोले १ कालीमिरिचेआधातोला॥इनस बचीजकाचूर्णकरकोगुड चौदा १४ भागमिलायकेगो लीकरकोखाना इस्सेमुखकोरुचिहोगी औरअग्निमां द्य।बबेसी।दूरहोगी मलशुद्धिसाफहोयकोउदरशूल जायगा।अथवापीलुवृक्षकाओदाफलखानेसे भीअ र्शकृमि।संग्रहणी।गुल्मादिकरोगदूरहोवेंगे॥३५।३६॥

मूलम्

नुकेशाहिनिर्मोकवेल्लार्कमूलशमीपत्रशृंगांकुरैर्हिंगयु क्तैः॥प्रधूपोर्शसांनाशयत्याशुवीर्यंयथाकामिनीनित्य संगोनराणां॥३७॥

टीका

मनुष्यकाबाल।सांपकीकचुली।बाबिडंग।रुईकामूल। शमीपत्र।पुरानेसींगकाअंकुर।हींग।इनऔषधोंकाधू आंदेनेसेअर्शरोगदूरहोताहै॥जैसास्त्रीकेनित्यसंगकर नेसेपुरुषकावीर्यनष्टहोताहैतैसा॥३७॥

अजीर्णविषूचिकाचिकित्सा

व्योषत्रिवल्लवणपंचकमग्निजीरंक्षारोभयाह्वमिरि पुःकणमूलचव्ये॥तक्रेणवोष्णसलिलेनहिचूर्णमेत दग्निंभडाग्निमिवसंतनुतेनराणां॥३८॥पथ्याग्रेगंधा विडहिंगुशुंठीविषाकलिंगोद्भवचूर्णमेतत्॥सुखांबु

नाहंत्यरुची विषूचीमजीर्णशूलौ च हुताशकारी ॥ ३९ ॥

टीका

सोंठ। मरिच। पीपर। निसोत। पंचलवण। चीतामूल। जीरा। सज्जीखार। जवाखार। हर्र। ब्र। बिडंग। पीपरामूल। चाव। यह सब औषधका चूर्ण करके मठाके साथ अथवा उष्णोदकके साथ खानेसे अग्निदीपन होगा ॥ ३८ ॥ और छोटी हर्रा। बच। विड्लवण। हिंग भर्जित। सोंठ बैतरा। अतिविषा। इंद्रजव। यह सब औषधीका चूर्ण करके उष्णोदकसे लेना इस्से अरुचि। अजीर्ण। विषूचिका। शूल इत्यादि रोग नाश होता है और अग्निप्रदीप्त होता है ॥ ३९ ॥

मूलम्

हिंगूग्र गंध बिडनागरदीप्यपथ्याचूर्णं विभागपरिवर्द्धितमेतदाशु ॥ आनाहमूलगुदजानलमांद्यगुल्मविष्टंभकोदरविषूचिहरं समस्तम् ॥ ४० ॥

टीका

हींग भर्जित। बच। विड्लोण। सोंठ बैतरा। अजवाइन। छोटी हर्रे। इन औषधीका चूर्ण तक्र अथवा उष्णोदकसे लेना इस्से पेटका गुडगुडाना। शूल। अर्श। अग्निमांद्य। गुल्म। मलावरोध विषूचि इत्यादि रोगोंका नाश होता है ॥ ४० ॥

मूलम्

तालादेकोरसादेकएकः सीसकभस्मनः ॥ द्वौ भागौ गंधकाच्छुद्धान्मरिचाच्छोडशांशकः ॥ ४१ ॥ चूर्णं कृत्वा रक्तिकैका घृतेन सह भक्षिता ॥ विषूचिं सर्वशूलानि प्लीहानमुद्रं तथा ॥ ४२ ॥ गुल्मं संग्रहणीरोगं श्वासकासकफानि

ल्लान्॥अग्निमांद्यादिकान्रोगान्हंत्यसौवडवानलः॥४३॥

टीका

शुद्धहरताल भाग १ शुद्धपारा भाग १ सीसकभस्म भाग१ गंधक शोधित भाग २ काली मिरच भाग १६ यहसब चूर्ण करके नित्य १ रतिप्रमाण चूर्ण घृतमे मिलाय कोखाना विषूचिरोग। सर्वप्रकारका शूल। पांथरी। उदररोग। गुल्म। संग्रहणी। श्वास। खांसी। कफ। वायू। अग्निमांद्यादिकसमस्तरोगकोय ह वडवानलरस नाशकरताहै॥४१॥४२॥४३॥

मूलम्

जातीजातंत्रिकर्षं मरिचमपिपलं चार्धकर्षप्रमाणंगंधसूतं लवंगंविषमिदमखिलंचिंचिणीसस्यतोये॥पिष्ट्वामाषैकमात्रावितरतिदहनंवन्हिमांद्येचसद्योरोगान्शूलानिलादीन्दहतिहतगुणोवन्हिनामारसोयं॥४४॥

टीका

वन्हिरसमाह॥ ॥जायपत्री तोला १॥ जायफल तोला १॥ काली मरिच तोला ४ गंधक शुद्ध॥ पारा शुद्ध॥ लौंग॥ बचनाग शुद्ध॥ यह सात वस्तू को मिही नकर को इमलीके रस मो खल करे फेर उडदी बराबर गोली बांधे फेर रोगानुसार अनुपान योजना करको प्रातःकाल। वा सायंकाल एक१ गोली खानेसे अग्निप्रदीप्त होयको दुर्धर शूलरोग वातरोग इत्यादिकसमस्त रोग नाश होतेहै॥४४॥

कृमिचिकित्सा

खदिरकुटजनिंबो ग्रात्रिवृत्तघोषपथ्यामलकलिफलजोगोमूत्रसिद्धिःकषायः॥मुनिमितदिनपानःसत्यमेतन्न

मिथ्याकृमिकुलशतकोटीबहुमूलानिहंति ॥ ४५ ॥ येनमाक्षिकसंयुक्तंचूर्णंवैडंगजंयदि ॥ सेवितंतस्यजंतूनांभीतिर्नास्तिकदाचन ॥ ४६ ॥

टीका

खैरकाअंतर्छाल । इंद्रजव । नींबकीअंतर्छाल । बच । निसोत । सोंठ । मरिच । पीपर । छोटीहरे । अवरा बहेडा कायफ़ल इनऔषधोंकोदरकचिपायकोगोमूत्रमोकषायकरना इसकषायकोंसातदिनपीनेसेकृमिरोग जडमूलसे जाताहै ॥ ४५ ॥ अथवा । जोकोईपुरुषबाबिडंग काचूर्ण सहतकेसाथसेवनकरेतो कृमिरोगनष्टहोगा ॥ ४६ ॥

पांडुरोगचिकित्सा

पुनर्नवानिंबपटोलतिक्ताविश्वाभयादारुनिशामृतानां ॥ कषायकः पांडुगदंनिहंतिसश्वासकासोदरशूलशोथं ॥ ४७ ॥ गैरिकामलरात्रीणामंजनंकामलापहं तथागदितमाचार्यैस्तिक्ताचूर्णंसशर्करं ॥ ४८ ॥

टीका

गदहपूर्ना । नींबकीअंतर्छाल । पटोल । कुटकी । सोंठ । छोटीहरे । दारुहर्दी । गुडुच । इनचीजोकाकाढा करके पीनेसेपांडुरोग । श्वास । खांसी । उदरशूलसूजआदिकरको दूरहोतेहै ॥ ४७ ॥ औरगेरू । आवरा । हलदी । यहतीन वस्तूकोपानीमेपीसकोनेत्रमोअंजनकरनेसेकंवल रोगदूरहोताहै । अथवाकुटकीकाचूर्णचीनीकेसाथ खानेसेभीकंवलजातारहताहै ॥ ४८ ॥

रक्तपित्तचिकित्सा

वृषपत्ररसः सितामधुभ्यां सहितो लोहितपित्तमाशुहंति॥ वृषगोस्तनिकाभयाश्रृतं तस्मतिवापथ्वसना स्वकासनुद्धा॥४९॥ शर्करामधुसंयुक्तं छागीदुग्धमथापिवा गव्यंपंचगुणे तोये क्वथितं रक्तपित्तनुत्॥५०॥ दाडिमीकुसुमतोयनावनं नासिकास्त्रमपहंतिसत्वरं॥ माषपिष्टकदुकूलभूतिका लेपनं चशिरसोहितावहं॥५१॥ इतिश्री अहंमदनगरस्थित माणिकभट्ट वैद्यात्मज मोरेश्वर विरचिते वैद्यामृते प्रथमालंकारः॥१॥ ॥ ॥

टीका

अडूसे के पत्ते का रस तोला १ निकाल को उसमे तीन मासे मिश्री और सहत दे को पीजाना इस्से रक्तपित्त दूर होता है। अथवा अडूसा। दाख। छोटी हरे। इन तीनो का काथ करको उसी तीनो पदार्थ का चूर्ण उस्के काथमे दे के पीना उस्से रक्तपित्त और खाँसी दूर होगी। अथवा बक्री के दूधमो पुरानी चीनी और सहत दे को पीना इस्से भी पूर्व रोग दूर होता है। अथवा गौके दूधमे पंचगुणित जल मिलायको आँच पर चढाय देना जब बिलकुल पानी जलजाय खाली दूध रहजाय तब उस दूधको पीने से भी उक्त रोग दूर होगा। अनार के पुष्प का रस निकाल को नस्य लेने से नाकके रस्ते लोहू जाता होय तो बंद होजाय। अथवा उडदका पिष्ट। पीतांबर की राख इस्को पानी मो मिलायको माथे मे लेपकरनेसे भी रक्तपित्त दूर होता है॥४९॥५०॥ ५१॥ ॥ इतिश्री कर्करेइस्युपनामक रमानाथ विरचिते वैद्यामृत भास्करे प्रथमालंकारः॥१॥ ॥

सितोभवावंशभवोपकुल्यात्रुटित्वचामाज्यमधुप्रयु
क्तं॥अंत्यात्तदूर्ध्वं द्विगुणं निहंति चूर्णसमस्तान्क्षयजा
तरोगान्॥ २ ॥सश्वासकासानलमांद्यसुप्तजिव्हारु
चिश्लेष्मकपार्श्वशूलान्॥ज्वरोर्धरक्तांसकरांघ्रि
दाहयुक्तान्यथापापगणान्मुरारिः॥ २ ॥आयुर्यदा
स्याद्बलवन्नराणांसरक्तपित्तश्वसनक्षयाणां॥ ३ ॥

टीका

क्षयरोगेसितोपलादिचूर्णं॥ ॥मिश्रीभाग १६ वंश
लोचनभाग ८ पीपरभाग ४ लायचीभाग २ दालची
नीभाग १ इनपदार्थकाचूर्णकरको घृत औरसहतमि
लायकोखानेसेक्षयजन्यसंपूर्णरोगदूरहोतेहैं और
श्वास।खाँसी।अग्निमांद्य।सुप्तजिव्हा।अरुची।कफ।दो
नोपार्श्वभागकाशूल।ज्वर।मुखसेलोहूगिरना।काँधा
हात।पैर।इन्कादाहहोनायहसबरोगदूरहोगा अगर
आयुष्यबलवत्तरहोयतो।जैसाविष्णूपापसमुदायको
दूरकरते हैं वैसाहीयहचूर्णउक्तरोगोंकोदूरकरताहै॥३॥

मूलम्

नवनीतसितामधुप्रयुक्तोवरखोहेमभवःक्षयंक्षिणो
ति॥वितथःप्रभवेदयंप्रयोगोयदितन्मेशपथःसदाशि
वस्य॥ ४ ॥

टीका

मखनमिश्री।सहतइन्मेसोनेकावर्खमिलायकेखाय
तोक्षयरोगजरूरनष्टहोगा इसमेंग्रंथकारसदाशिवकी
सोगंदकरकोकहतहैंकिकभीझूंटानहोगा॥ ४ ॥

रसंगंधंकंबोर्भसितमपिकापर्दभसितंमरीचंभूचंद्रांबुधिरससहस्रांशुलविकं।रसांश्चंशंटंकसकलमपिचूर्णीकृतमिदंक्रमाद्यावन्निष्कंघृतसहितमद्यात्क्षयहरं।४६।।

टीका

शुद्धपारा भाग १ गंधक शोधित भाग १ शंखभस्म भाग ४ कपर्दिका भस्म ६ काली मिरिच भाग १२ सोहागीकी लाही भाग।० इनपदार्थोंका चूर्णकरके घृतसे भक्षण करना मात्राप्रमाण मासा १ रोजखाना यावन्निष्कपर्यंत क्षयरोग दूरहोय।। ५ ।।

कासश्वासचिकित्सा

भार्ङ्गीकट्फलकट्तृणांबुदधनांशृंग्युग्रगंधारजोपथ्यानागरदेववृक्षजनितोबाह्लीकमध्वन्वितः।।क्काथोयंज्वरकासहाश्वसनहाश्लेष्मामयध्वंसिनोवक्रोत्थामयहागलग्रहहरोवातापहःकीर्तितः।। ६।।

टीका गोथा

भारंगमूल।कायफल।चिराईतारवस धनिया।काकडासिंगी।बच।पित्तपापडा।छोटीहरे।सोंठ।देवदार। इनची जोका काढा करकोहींगऔरसहतमिलायकोपीना इस्से ज्वर खाँसी।दमा।कफजन्यरोग।मुखरोग।गलगंडादिरोगोंका नाशहोताहै।। ६।।

मूलम्

यवक्षारकर्षोमरीचंद्विकर्षंद्विकर्षंपकुल्यापलंदाडिमस्य।।पलैवेंदसंख्यैर्गुडोत्रप्रदेयोगुटीयंहठात्सर्वकासान्नि

हंति॥७॥

टीका

जवाखार १रूपयेभर।कालीमिरिच रुपैभर।पीपर२रू० अनारकाछिकुला४रू०।गुड १६रू०। इनसबचीजोकोंकूटपीसकेगोलीकरना इसगोलीकेखानेसे कासरोगजरूरदूरहोगा॥७॥

मूलम्

अर्कप्रसूनांतरवह्निजानां गुटीसकासंश्वसनंनिहंति॥
गुरोःसकाशादिदमापनत्वं वैद्येनमोरेश्वरसंज्ञकेन॥८

टीका

अर्कपुष्पके भीतर जो चौपहलहोताहैउसको मिरिचकेसाथपीसकोगोलीबनायकोखानेसे कासश्वासदूरहोताहै यहऔषधीहमनेगुरुसे प्राप्तकियाहै शास्त्रमेनहीदेखाहै ॥८॥

कासश्वासचिकित्सा

शरपुंखाजटाधूपदानात्कासःपलायते॥कांतावक्षोजसंस्पर्शाद्यमिनांनियमोयथा॥९॥पंचांगकृष्णधत्तूरधूपात् कासःपलायते॥यवासाधूमपानेनकासोनश्यतितत्क्षणात्॥१०॥

टीका

सरफोंकाकीजडसुखायकेधूम्रपानकरनेसेखाँसीरोग भागजाताहैजैसास्त्रीकेस्तनस्पर्शपुरुषकोहोनेसेसब्रह्मचर्यादिनियमभंगहोताहैतैसा॥९॥कालेधतूरेकापंचांगमूल।पत्र।पुष्प।फल।त्वचा।लेकेंउसकाधूँआहुके

पररखकेपीनाइस्सेखाँसीदूरहोतीहैऔरधमासेकाधूँआ
पानकरनेसेभीखाँसीदूरहोतीहै॥१०॥

मूलम्

अंत्रेणहीनंमरिचैःसगर्भरंभाफलंतन्निशिसन्निधाय॥
प्रातःसुभृष्टंमृदुपावकेद्याश्वासान्छिनत्तीवतरूनकुठारः
॥११॥

टीका

केलेकाआंतनिकालकोउसमेकालीमिरिचकीबुकनी
भरकोरातभररखनाफेरप्रातःकालवहीकेलाकोमृदुअ
ग्नीपरभूँजकोखानाउस्सेश्वासरोगदूरहोताहै।जैसाकुठा
रवृक्षोंकोछेदनकरताहैतैसा॥११॥

मूलम्

लाक्षिकामधुकपद्मकोषणापक्कबार्हतफलाज्यमाक्षिकै
लेहिकाक्षयजकासमाहरेत्कामिनीवदयितस्मरज्वरम्
॥१२॥

टीका

अवलेह॥ ॥पीपरकीलाख।ज्येठीमद।पद्मकाठ।पीप
र।पक्के जामुनकाफल।इनवस्तूकाचूर्णकरकोघृतसह
तमेमिलायकोखायउस्सेक्षयजनितखाँसीदूरहोयजै
सीतरुणीअपनेपतीकेकामज्वरकोनाशकरतीहैवैसाय
हअवलेहक्षयजकासकोदूरकरताहै॥१२॥

मूलम्

क्षुद्रासत्वंवाकषायंघनंवाभार्ङ्गीशृंगीकट्फलंकारवी
च॥व्योषोकुष्ठंसैंधवंमस्तुपोस्तौजीरक्षारौदीप्यचित्रा

जमोदाः॥१३॥सर्वैस्तुल्यं चाष्ट भागा भयास्याद्देयःसर्वैर्वेद भागो गुडोत्र॥पक्का वन्हौ क्षौद्रयुक्तोवलीढः कासःश्वासौ दुर्धरौसर्वजातौ॥१४॥अग्नेर्मांद्यं कामलां पाडुरोगं गुल्मं हिक्कां राजयक्ष्म ज्वरौच॥अर्शः प्लीहा नाहवातोर्द्ध्ववातान्हंति क्षुद्रालेहएषःक्षणेन॥१५॥

टीका

भटकटैयाकासलअथवावक्लाय अथवाभटकटैयाकाघनभागनिकालरखना उस्मे भारंगमूल।काकडासिंगी।कायफल।सोंठ।सोंठ।मिरिच।पीपर कुट।सेंधा नागरमोथा।अफीमकीकली।जीरा।सज्जीखार।जवाखार।अजवाइन।चीताकामूल।अजमोदा।यहऔषधसम भागलेकोहरे ८ भागलेकौसबचूर्णकरकोसबकेचतुर्थणगुडउस्मेंदेकोपाककरना उस्मे चूर्ण मिलायकौ औरसहतदेकोचाटना इस्से अत्यंतदुर्धर जोकास औरश्वास दूरहोता हैऔरअग्निमांद्य।कँवल।पांडुरोग।गुल्म।उचकी।राजयक्ष्माऔरज्वर।अर्श।पिलही।पेटकाफूलना।वात।उर्ध्ववायु।इत्यादिरोगौंकोयहअवलेहक्षणमात्रमोनष्टकरती है॥१३॥१४॥१५॥

मूलम्

सूतगंधचपलाहरीतकीभूतवासवृषचित्रपष्टिकाः॥भागतोथपरिवृद्धिमागताबब्बुलक्वथिततोयमर्दिता॥१६॥

टीका

गुटिका॥ पाराशोधितभाग१ गंधकशुद्धभाग २पीपरभाग ३ छोटीहरेभाग ४बेहडाभाग ५अडूसेकापत्ताभाग

भारंगमूलभाग ७ इन्का चूर्णकरको उस्मे पारा और गंधक की कजली करको वह चूर्ण और कज्जली एकत्र करको बबुरके छालका कषायका पूर्व औषधीको पुट देको खलकरना बाद उस्की गोली गुंजाप्रमाण बाँधको गोली खाना कासश्वास दूर होगा॥ १६॥

मूलम्

ताम्रं कृशानौ सलिले विधाय निर्वापयेद्वाणिरसे त्रिवारं॥ अधऊर्ध्वमस्य पटुप्रदत्वा पुटं प्रदत्वा च भवेत्तु भस्म॥ १७॥ कासातुराय श्वसनातुराय हितं तदेतन्मगधामधुभ्यां॥ यथा तृषार्ताय सुगंधशीतं चकोरनेत्राकरदत्तमंभः १८

टीका फेर कुल्फाके रसमे ३ वार बुझावना

ताम्रभस्म॥ ॥ उत्तम ताँबाको आगपर तपायको जलमे बुझावना इस तरह तीन बेर बुझावना फेर उस ताँबाके नीचे ऊपर पंचलवणका चूर्ण देको पुटपाक करना उस्से भस्म होता है सो भस्म सहत पीपरके साथ खिलावनेसे कासश्वास दूर होता है जैसा सुंदर स्त्रीके हाथसे सुगंधित जल पीनेसे तृषातुर पुरुषका तृषा शांत होती है तैसा॥ १८॥

हिक्काचिकित्सा

हरेणुका पिप्पलिकाकषायो हिंग्वन्वितो पोहतिपंचहिक्काः॥ नस्यं तथालक्तकसंभवं च स्तन्येन वा पोहति माक्षिकाविट्॥ १९॥

टीका

कपिला। अथवा निर्गुंडी। पीपर इन्का कषाय करको हींग उस्मे देको पियावना उस्से पाँचो तरेकी हुचकी बंद होती

गी।अथवामहाकरकोसुंघावनेसे भीदूर होताहै।अथवामक्षिकाकाविष्टास्त्रीकेदूधमेमिलायकोनस्य देनेसेभी पंचप्रकारउचकीदूरहोतीहै॥१९॥

स्वरभेदअरोचकचिकित्सा

दुग्धप्रयुक्ता मलकिनराणांनष्टस्वराणांसुखमातनोति।।यथामृगाक्षीसुरतंनराणांकंदर्पदर्पप्रतिपीडितानां॥२०॥सौवर्चलंगोस्तनिकामरीचमजाजिकाकारविकाम्लवृक्षैः॥क्षौद्रंगुडंदाडिममित्युपायैःकरोतिविध्वंसमरोचकानां॥२१॥

टीका

अंवरेकाचूर्णदूधमेपीनेसेअवाजबेठाहोयतोखुल्जावेगा।जैसाकामपीडितपुरुषकोमृगनयनीस्त्रीकासुरतप्राप्तहोनेसेसुखहोताहैवैसाअवाजखुलनेसेसुखहोताहै।औरसेंधा कालाा दाख।मिरिच।जीरा।सौंफ।इमलीसहत।गुड।अनार।इत्यादिउपायकरकोमुखकीअरुचीदूरहोतीहै।औररुचिआतीहै॥२०॥२१॥

वमनचिकित्सा

पथ्यामलक्षौद्रसिताश्वलाजाःपलोन्मितास्युःकुडवंजलस्य॥तद्वाससागालितमाशुपीतंछर्दिंत्रिदोषैर्जनितांनिहंति॥२२॥त्रिजातकव्योषलवंगजीरनागाव्हयपुंधिकचूर्णमेतत्॥मधुप्रयुक्तंसहसानिहंतिद्विष्टार्थजांछर्दिमपिप्रसक्तां॥२३॥

टीका

हरेतोला ४ अंवरातोला ४ सहततोला ४ मिस्रीतो० ४

धानकालावा तोले ४ इन्पदार्थका चूर्णकरको पावभर जलमे मिलायको कपडे मे छानको पीना इससे त्रिदोष जन्यवांति दूरहोगी॥२२॥ औरदालचीनी। तमालपत्र। लायची। सोंठ। मरिच। पीपल। लौंग। जीरा। नागकेसर। पीपरामूल। इन्का चूर्णकरको सहतमो मिलायको खाना इस्से बुरापदार्थ देखनेसेवा दुर्गंधसे जो छर्दिहोतीहै सोएकाएक बंदहोजातीहै॥२३॥

तृष्णाचिकित्सा

अर्धाढकं सुरुचिरं पर्युषितस्य दध्नः खंडस्य षोडशपलानि शशिप्रभस्य॥ सर्पिः पलं मधुपलं मरिचं द्विकर्षं शुंठ्याः पलार्धमपिचार्धपलं चतुर्णाम्॥२४॥ श्लक्ष्णे पटेल लनया मृदुपाणिघृष्टे कर्पूरधूलिसुरभीकृतचारुभांडे॥ एषावृकोदरकृता सुरसा रसाला यास्वादिता भगवता मधुसूदनेन॥२५॥

टीका

श्रीखंड॥ ॥पूर्वदिनका जमाया दही २ सेर चीनीसफेदपक्की सेर १ घृततोला ४ सहत तोला ४ मिरिचतोला २ सोंठबेतरा तोला २ लायचीछोटी तोला २ इन्पदार्थकोमहीकेनादमो कपूरसे सुगंधितकरको उस्मेसुंदर चिकना कपडाबांधको स्त्रीके मृदुहस्तसे छनावना इस्को श्रीखंड कहतेहै यह श्रीखंडरो जसेवन करनेसे मनुष्य कीतृषा शांतहोतीहै इसीको रसाला भी कहतेहै यही श्रीखंड पूर्वमो भीमसेननेबनायको श्रीकृष्ण भगवानको खिलाया रहा॥२४॥२५॥

द्राक्षामृतानागरपुष्कराणांसपंथिकानांक्वथितंसकृष्णं॥
मदेषुमूर्छासहितंघृताढ्यंदुरालभायाःक्वथितंभ्रमेच २६

टीका

दाख।गुडुच।सौंठ।पुष्करमूल।पीपरामूल।इन्काकषाय
करकेफेरछोटीपीपलकीबुकनीमिलायकेपीना इस्सेम
द अथवामूर्छादूरहोताहै॥औरधमासेकाकषायकरके
उस्मेघृतमिलायकेपीनेसेभ्रमरोगदूरहोताहै॥२६॥

दाहचिकित्सा

सहस्रधौताज्यविलेपनेनदाहःशमंगच्छतिशीघ्रमेव।त
थाहिमोधान्यसमुद्भवोंतर्दाहंसतृष्णंससितंनिहंति॥२७

टीका

गौकाघृतहजारबेरजलमेधोयकेशरीरमेलगावनेसेदा
हशमनहोताहैउसीतरेसेरातकोपुरवामेधनियाभैंरख
नादूसरेदिनसबेरेकपडेसेछानकेवहपानीलेनाउस्मेमि
स्रीमिलायकेपीनेसेअंतर्दाह।वतृषाशांतहोतीहै॥२७॥

अपस्मारचिकित्सा

भजेन्माक्षिकेणप्रयुक्तंवचायारजःक्षीरभक्ताशनोमान
वोयः॥अपस्माररोगश्चिरोत्थोपिघोरःशमंयातितस्या
शुनोत्रास्तिशंका॥२८॥

टीका

बचकाचूर्णसहतकेसाथखाना।औरदूधभातपथ्यकर
ना इस्सेमिरगीरोगदूरहोताहै बहुतदिनकारोगहोयतोभी
दूरहोगा॥इस्मेशंकानहीकरना॥२८॥

वातव्याधिचिकित्सा

एषाकर्षमितावटीसुघटिताजीर्णेगुडेयुक्तितोह्विघ्नंदीप्य तुषंपलद्वयमिताशुंठीतथातेजनी ॥ भक्ष्येकानिलरोगिणा घृतयुतापथ्याशिनातत्वतोवातव्रातविनाशनेसुमतिभिः ख्याताभुजंगीपरा ॥ २९ ॥

टीका

भुजंगीगुटिका ॥ ॥ पुरानागुड भाग १ अजवाइनकीभूसी भाग २ सौंठबैतरा तोला ८ मालकंगुनी तोला ८ सबचीजे काचूर्ण करकोगुडमो मिलायको एक १ तोलेकीगोलीबां धना और एक २ गोलीघृतसेरोजखानेसे वातव्याधीदूरहो तीहै तैलादिकनहीखाना ॥ २९ ॥

मूलम्

तेजोह्वाप्रस्थमेकंपयसिगजगुणेपाकयुक्त्याविपाच्यं व्योषंपथ्यांशताह्वांहृमिरिपुमनलंग्रंथिकंचाजमोदं ॥ उ याकुष्ठाश्वगंधौसुरतरुममृतेपालिकानिप्रदद्यात्सर्वान् वातान्वटीयंघृतमधुसहितानास्तिभावान्करोति ॥ ३० ॥

टीका

गुटी ॥ ॥ मालकङ्गुनीसेर १ जलसेर ८ इस्काकषायकर कोअष्टमांश जलरहजायतबउतारलेनाफेरकालीमिरि च । सौंठ । पीपल । छोटीहरे । सौंफ । बाविडंग । चित्रकमूल । पीपरामूल । अजमोदा । बच । कुट । असगंध । देवदार । गुडु बच्चनाग । यहसर्वऔषधीचार ४ तोले लेकोचूर्णकरको उक्तकषायमोदेना और गोलीबाँधनाफेरगोली १ घृतम धुकेसाथखानेसेवातरोगमूलसेनष्टहोताहै ॥ ३० ॥

मूलम्

निर्गुंडिकारसात्प्रस्थं प्रस्थं मार्कवजाद्रसात्॥ रसाद्धत्तूरजात्प्रस्थं गोमूत्रं प्रस्थसंमितं॥३१॥ वचाकुष्टं हेमबीजं तेजोव्हा कटुफलं तथा॥ पलार्द्धंशा नि सर्वैस्तु वत्सनागः समो मतः॥३२॥ तैलप्रस्थं पचेद्युक्त्या वातरोगेषु शस्यते॥ हेमंते हरिणाक्षीणां गाढमालिंगनं यथा॥३३॥

टीका

निर्गुंडीकारस सेर १ भंगरैयाकारस सेर १ धत्तूरेकारस सेर १ गोमूत्र सेर १ बच। कूठ। धत्तूरेका बीज। मालकंगुनी। काय फल। यह पाँच चीज दो २ तोले लेना सब के बराबर बचनाग शुद्ध लेना और तिल तेल एक सेर मो सब वस्तु डालको तैलपाक युक्तिसे पक्क करना तब वह तेल वात रोगीपुरुषको लगानेसे रोग दूर होताहै यह तेल सर्व औषधीसे अधिक हितावह है। जैसा हेमंतऋतुमे सुंदर स्त्री का आलिंगन हितावह होताहै तैसा॥३१॥३२॥३३॥

अथ वातरक्तचिकित्सा

एरंडतैलेन गुडूचिकायाः क्काथोथवा वर्धितपिप्पली वा॥ गुडेन पथ्या खिलवातरक्तं विनाशयेत्पथ्ययुतस्य पुंसः॥३४॥

टीका

गुरुचका कषाय करको उस्मे रेंडीका तेल देको वह कषाय पीनेसे वातरक्त दूर होताहै अथवा वर्धित पिप्पली खानेसे भी वातरक्त दूर होताहै अथवा गुड मो बैसा खी हरेका चूर्ण मिलाको खानेसे भी वातरक्त दूर होताहै। तीता खट्टा तेल वगैरे वस्तूसे बचावना अवश्य रोग दूर होगा वर्धित

पिप्पलीकहे पहिलेदिन ३पीपरे दूसरेदिन ६ तीसरेदिन ९ इसप्रकारसे दस १० दिनतक बढावना फेर उसी तरेसे दस दिनतक घटावना उस पीपरको चतुर्गुणित दूध अथवा जल मो पीना। अथवा पाँचसे बढावना ५।१०।१५। इत्यादि। अथवा सातसे बढावना ७।१४।२१ इत्यादि प्रकारसे जितनी पीपर उस्से चौगुना दूध अथवा जल लेना ऐसा बीस २० दिन करनेसे पांडुरोग। वातरक्त। श्वासादि रोग दूर होतेहैं इस्को वर्धित पिप्पली कहतेहैं ॥३४॥

मूलम्

तालं रसं तुवरिकां नयनेंदुबाण भागैर्विशुद्ध वसु जातरसे विमर्घ ॥ दत्वा शराव युगले प्रविधाय मुद्रां दद्याद्गजाख्यपुटमस्य भवेत्तु भस्म ॥३५॥ दृष्ट्वा कृतिं प्रकृतिमप्यखिलामवस्थां दृष्ट्वा पुनश्च बहुधा बहुधा विचार्य दद्यात्वतं दुलमिताहरिताल मात्रां विद्यामयायतिवरादियमाप्यस्तात् ॥३६॥

टीका

हरताल भाग २ पारा भाग १ फिटकिरि भाग ५ इनको एकत्र करको करेलेके रसमो खलकरना। वह जब सूखजाय तब मट्टीके दिया मे उस्को रखको ऊपरसे दूसरा दिया ढांकको संधि बंद करको गजपुट देनेसे सुंदर भस्म हो जाता है यह हरताल भस्म जिस्का देना होय उस्की प्रकृति देखको रोगकी अवस्था विचार करको एक चाउर बराबर मात्रा देनेसे वातरक्तादि रोग नष्ट होजाते हैं। यह विद्या ग्रंथकार कहतेहैं कि हमने ईश्वर कदंरीसे पाई है बहुत

सेवांकरकोयहमानना॥३५॥३६॥

उरुस्तंभचिकित्सा

भल्लातकुल्यामगधाजटानांकृतःकषायोमधुसंप्रयुक्तः॥उरुग्रहंघोरमपिप्रवृद्धंनिहंतिगोमूत्रयुताकणावा॥३७॥

टीका

भिलावाँ।पीपर।पीपरामूल।इन्काकाढाकरकोसहतमिलायकोपीनेसेबड़ाघोरउरुग्रहहोयतोभीदूरहोताहैअथवागोमूत्रमेंपीपरचूर्णखानेसेभीरोगजाताहै३७

आमवातचिकित्सा

रास्नारग्वधदेवदारुऋतुभूच्छिन्नाभोङ्गवागोक्षुरैरेरंडेनयुतैःकषायकवरोविश्वारजोमिश्रितः॥नानासंधिरुजान्वितंविजयतेघोरामवातामयंस्वर्णांगीकुचपद्मकुड्मलरुचिर्दीपोंधकारंयथा॥३८॥

टीका

रास्ना।धनबहेडेकागूदा।देवदारु।घेटुलीमूल।गुडुच।गोखरू।एरंडमूल।इनऔषधोंकाकाढाकरकोउसमेसोंठकाचूर्णमिलायकोपीनेसेअनेकसंधिपीडायुक्तआमवातदूरहोताहैस्वर्णांगीस्त्रीकेस्तनकमलकेमौंडदेदिप्यमानजोदीपउस्सेजैसाअंधकारनष्टहोताहै।तैसायहऔषधआमवातकोदूरकरताहै॥३८॥

मूलम्

शरावनिहितंसूतंहिंगुवंगंमुहुर्मुहुः॥दत्वाग्निंसूर्ययामंतंनिंबकाष्ठेनघट्टयेत्॥३९॥एवंभवेत्पीतवर्णोरस

राजस्यभूतिका ॥ यथातुपानंरोगस्य दद्याद्भिषगुत्तम ॥ अर्जितं विविधोपायैर्जंगमाद्भिषजान्मया ॥ इदंतत्संप्रलब्धंतुपालनीयंचिकित्सकैः ॥४१॥

टीका

रसभस्म ॥ ॥पारा भाग १ रांगा भाग २ इस्कोपरईमोरख कोनींबकेसोठेसे घोटकोउसपरदूसरीपरईढांककोसंधिलेपकरकोवारप्रहरबारा १२ आंचदेनातबपीतभस्म होताहै इसभस्मको अनुपान विचारकरकोदेनेसे आमवातादिरोग दूरहोताहै। यहक्रियामैने परिश्रमसे जंगमवैद्यसे प्राप्त कियाहै सोवैद्य लोग इस्को रक्षण करै ॥३९।४०।४१

शूलचिकित्सा

तुरंगीपुरीषोदकं हिंगुयुक्तं महाशूलहारि प्रदिष्टं भिषग्भिः यथा हिंगुविश्वाविडैर्वापितो सौकुलित्थोद्भवोवाकषायः प्रदिष्टः ॥४२॥

टीका

घोडीकेलैंडीकारस निकालकोहिंगउस्मेदेकोपिलावना इस्से शूलरोग दूरहोताहै। और कुलथीकाकषायकरको हींग। सोंठ। कालानोन इस्का चूर्णकरको कषायमोमिलायको पीजानेसे भी शूलरोग दूरहोताहै ॥४२॥

मूलम्

विश्वाबचाहिंगुमरीचजीरामृतानलैर्मार्कवतोयपिष्टैः ॥ कृतावटीयंचणकप्रमाणाशूलाग्निमांद्यानिलरोगहंत्री ॥४३॥

टीका

सौंठ। बच। हींग। काली मिरिच। जीरा। शोधित बचनाग
चित्रकमूल। इन सभौंको वस्त्रगालित करको भंगरैया
केरसमो खरल करना फेर चनाबराबर गोली बाँधना वह
गोली अनुपानका योजना करको रोज एक खानेसे शू
ल। अग्निमांद्य। वातरोग सब दूर होता है॥ ४३॥

मूलम्

चिंचावल्कलभूतिका पलमिता तत्तुल्य भागः पटु व्यू
हो निंबुरसेन कल्पितमिदं शंखोपि भूत्या समः॥ यावद्व
स्तु विचूर्णितो भवति तं संताप्य निर्वापयेत्स्मिन्हिंगुम
रीचनागरकणाः कर्षप्रमाणाः क्षिपेत्॥ ४४॥ निष्कां
शो विषगंधकौ रसयुतौ दत्वा विमर्द्यौ तनू कोलास्थि
प्रमिताग्नि मांद्यजनितान्रोगान्निहंति क्षणात्॥ शूलं
संग्रहणीमजीर्णमरुचिं संपक्तिशूलं क्षयं त्वेषा शंख
वटी निजोपकृतिभि र्विध्वंसदा रक्षति॥ ४५॥

टीका

शंखवटी॥ ॥इमलीके वल्कलकी राखी तोले ४ पंच
लवण मिलको तोले ४ इन्को नीबूके रसमो भिजोय देना
फेर शंख तोले ४ लेको आगपर तपावना जब हाथसे मी
सको चूर्ण होय तब वह शंख को नीबूके रसमो बुझाव
ना फेर सबको एकत्र खरल करना फेर हींग। काली मि
रिच। सौंठ। पीपर। यह चार चीज तोले तोले उस्मे देना
और शुद्ध बचनाग मासे ४ शोधित गंधक मासे ४ शोधित
पारा मासे ४ उस्मे मिलायको खरल करको छोटे बेर केबी
या बराबर गोली बांधना वह गोली केखानेसे अग्निमांद्य

सेजोरोगहोतेहैंसो और शूल।संग्रहणी।अजीर्ण।अरुचि।आहारपरिपाकनहोयकोजोशूलहोताहै और क्षयइत्यादिरोगसबदूरहोतेहैंयहशंखवटी अपनेउपकारसेजगत्कारक्षणकरतीहै।।४४।।४५।।

उदावर्तचिकित्सा

क्षारत्रयंलवणपंचकमग्निदीप्यव्योषाभयाकृमिरिपुत्रिवृदुग्रगंधा।।चूर्णःस्नुहीजपयसाबहुधाविभाव्योदावर्तगुल्मजठरप्रभृतीन्निहंति।।४६।।

टीका

सज्जीखार।जवाखार।पापडखार।पाँचोलौंन।चित्रक।अजवाइन।सोंठ।मिरिच।पीपल।छोटीहरे।बाविडंग।निसोत।घोडबच।इन्काचूर्णकरकोथूहरकेदूधमेंपाँचचारपुटदेनाफेरवहीचूर्णकोअनुपानसेखानेसे उदावर्त।गुल्म।उदर।इत्यादिरोगजातेरहतेहैं।।४६।।

गुल्मप्लीहादिचिकि०

यवक्षारोयवानीचसैंधवंचाम्लवेतसं।।हरीतकीवचाहिंगुचूर्णमुष्णेनवारिणा।।४७।।सप्ताहाद्गुल्मनिचयंसशूलंसपरिग्रहं।।भिनत्तिनात्रसंदेहोवन्हेर्वृद्धिंकरोति च।।४८।।

टीका

जवाखार।अजवाइन।सेंधा।वच।अमिलबेत।छोटीहरे।हींग।इन्काचूर्णगरमपानीकेसाथखानेसेसातदिनमेंगुल्मरोगशूलयुक्तहोयतोभीनष्टहोताहै औरअग्निप्रदीप्तहोताहै।।४७।।४८।।

कंपिल्लत्रिवृतोः समंस्नुहिपयः सर्वैः समानोरसो धात्र्याः
सर्वसमानकंघृतमदस्तुल्यंपयः सैंधवं ॥ स्वल्पांशे वि
पचेदिदंविजयते कर्षप्रमाणं घृतं गुल्मान्शूलपरिग्र
हादिसहितान्प्लीहोदरंकच्छपं ॥ ४९ ॥

टीका

बिंदुघृतं। कपिला। निसोत। दोनोके बराबर थूहरका दू
ध २ अवरेका रस। ४ घृत ८ सहत ८ दूध ८ सैंधा अंदाज
६ मासे यह सब एकत्र करको आगपर पकायको रख
नाफेररोजउसमेसे तोला भर घृत खानेसे शूलसहित गु
ल्मप्लीहोदर कच्छपोदरादि समस्त नष्ट होते हैं ॥ ४९ ॥

मूलम्

अर्कस्नुक्सातला चिंचा पलाश कदलीतिलाः ॥ अपा
मार्गोमुष्कक श्चैव कपर्दः शंख एवच ॥ ५० ॥ एतेषां भूति
जः क्षारो पारदः पटुपंचकं ॥ पंचक्षाराः समंसर्वैं त्रिभा
गोगंधकः स्मृतः ॥ ५१ ॥ भूरसा चैव सोरा च कासीसम्भव
सादरः ॥ एतच्चतुष्टयंसर्वै रोषधैस्तुल्यभागिकं ॥ ५२ ॥
सर्वेषांकज्जलिंकृत्वा निंबुनीरेणमर्दयेत् ॥ प्रदद्यान्न
लिकायंत्रेवन्हियामचतुष्टयं ॥ ५३ ॥ दत्वाद्रवंतुगृह्णी
यात्सूचिकाद्रवकारकं ॥ एकवल्लंद्विवल्लंवा दद्यान्न
लिकमारसं ॥ ५४ ॥ गुल्मार्शः प्लीहशूलघ्नो नारोगाणामंत
कःपरं ॥ शंखद्रवरसोह्येषः कृतकर्मा नसंशयः ॥ ५५ ॥

टीका

शंखद्रव ॥ ॥ रुई। थूहर। भूमिफेना। इमली। पलाश।
केलाकाछाल। तिल। चिचिंडा। मुष्कक। कवडी। शंख

यह ग्यारह ११ चीजकी राखीकरको खार निकालना फे
र पारा। पंचलवण। पंचक्षार। यह मिलायको २२ औषधी
को तोला तोला लेना। और गंधक ३ तोला और फिटकि
री। सोरा। हिराकस। नवसादर। यह चार ४ वस्तु छ छ ६
तोले लेना इन सभ चीजोंको महीन करको नींबूके रसमो
खल करना फेर ऊर्ध्वनलिकायंत्र मो देको चार ४ प्रहर
अग्नि देको अर्क उतारको सीसीमे रखना। नित्य ३ गुंजा
प्रमाण अथवा ६ गुंजाप्रमाण अर्क पानीमो मिलायको
पीना अथवा सोंठके चूर्णमे अर्क मिलायको खाना इस्से
गुल्म। अर्श। प्लीह। आदिकरको रोगोंका नाश होता है।
इस्को शंखद्रव कहते हैं यह कार्य करनेमे बडा समर्थ है
इसमे संशय नही॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥

मूलम्

पिप्पलीसहितबीजपूरकं द्राक्निहंतिनवनीतसंयुतं
शूलहृत्क्षतयुतंहृदामयविघ्नसंघगमिवसाधुमंडलं
॥५६॥ ॥ इतिश्रीवैद्यामृते द्वितीयोलंकारः॥२॥

टीका

पीपर। बिजोरानीबूका गूदा। मखन। यह तीनो चीजके
एकत्र करको खाना इस्के सेवन करनेसे शूल। हृद्रोग।
क्षय। यह रोग दूर होते है जैसा साधुसमागमसे विघ्नस
मूह दूर होता है तैसा॥५६॥ इतिश्रीवैद्यामृतभाषा टी
कायां द्वितीयोलंकारः॥२॥ ॥

मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा

पाषाणभेदकृतमालकधन्वयासपथ्यात्रिकंटलक

षायनिषेवणेन॥ मध्वन्वितेनसहसाविरहंप्रयांतिरुक्
दाहबंधसहितंकिलमूत्रकृच्छ्रं॥१॥

टीका

पाषाणभेद। धनबहेडेकागूदा। धमासा। छोटीहरे। गो
खरू। इन्काकषायकरकोउस्मेसहतदेकोपीनाइस्से
मूत्रकृच्छ्रदूरहोताहै॥१॥

मूलम्

दुग्धमाक्षिकयुतासखेयदासेवितातुतिलकोलभू
तिका॥ मूत्रघातजनितव्यथा तदा दाहवत्यपिनृणां
नतिष्ठति॥२॥

टीका

तिलकेभूसीकाराखदूधमेमिलायकोउस्मेसहतडा
लकोपीनाइस्सेमूत्रघातसंबंधीजोपीडाहैसोदूरहोती
है॥२॥

अश्मरीचिकित्सा

आकल्लुगोक्षुरजटातुलसीशिलाभिरेरंडमूलमगधा
मधुकैःप्रयुक्तः॥ तर्कारिमूलसुरसासुरपुष्पशुंठीक्का
थोनिहंतिबहुलाप्रतिवापितायं॥३॥ सप्ताहमेवपिब
तांनियमेनपुंसांघोराश्मरीमनिरुजंसहशार्कराच॥आ
वीपयोमधुविमिश्रितमाशुतद्वत्चूर्णंत्रिवृत्कुटजबी
जभवंवदंति॥४॥

टीका

अकलकरा। गोक्षुरमूल। तुलसीकापत्ता। पाषानभेद। मु
लहठी। अरंडमूल। पीपर। जेठीमद तर्कारीमूल। निर्गुंडी। लवं

ग। सोंठ। इन औषधों का कषाय करको लायची छोटी की बुकनी देको वह कषाय सात दिन पीनेसे दुर्धर जो अश्मरीरोग है सो दूर होता है अथवा मेढी को दूध मे सहत देको पीनेसे भी रोग नष्ट होता है अथवा निसोत इंद्रजव का चूर्ण करको दूध मे अथवा चाउर के धोवन मे मिलाय को पीनेसे भी रोग दूर होता है ॥ ३ ॥ ४ ॥

प्रमेहचिकित्सा

धात्र्याः कषायं मधुरात्रियुक्तं वटांकुराणां समधुं कषायं ॥ पाषाणभेदं मधुमिश्रमेतत्त्रयं प्रमेहापहमामनंति ॥ ५ ॥

टीका

अवरे का कषाय करको सहत और हरदी का चूर्ण उसमे देको पीना अथवा वटके अंकुर का कषाय करको सहत मिलायको पीना अथवा पाषाणभेद का चूर्ण सहत मे मिलाय को खाना यह तीनो औषधी प्रमेहको दूर करती है ॥ ५ ॥

मूलम्

त्रिकंटकानां क्वथिते ष्टनिघ्ने पुरं पचेत्साक विधानयुक्त्या ॥ फलत्रिकव्योषपयोधराणां चूर्णपुरेण प्रमितेन दद्यात् ॥ ६ ॥ वटीप्रमेहं प्रदरं च मूत्रघातं च कृच्छ्रं च तथाश्मरीं च ॥ शुक्रस्य दोषं सकलांश्च वातान् निहंति मेघानिव वायुवेगः ॥ ७ ॥

टीका

गोखरू के आठगुना जल देको कषाय करना जब एक

गुनारहजायतबउसमेगुगुलदेकोपाकपुक्तिसोपाकक
रनाजबगाढाहोयजायतबउसमेहरा।विडंग।भवरा।
सोंठ।मिरिच।पीपर।नागरमोथा।इन्का चूर्णकरकोदेना
फेरउस्की गोलीबांधनाफेरउसगोलीको अनुपानयोज
नाकरकोखानेसे प्रमेह।प्रदर।मूत्राघात।अश्मरी।शु
क्रकादोषसंपूर्ण।वायु इत्यादिरोगसर्वदूरहोताहै।जै
सावायूकेझोंकसेसर्वमेघमंडलन—प्र—रहोजा
ताहैतैसा।।७।।

मूलम्

समानभागेशुचिताम्रवंगेतयोःसमानंलवणंप्रसिद्धं।
शरावयोःस्थाप्यविधायमुद्रांददेत्पुटंतस्यगजाभिधे
यं।।८।।ततोभवेद्भस्मविशेषसौम्यंयथानुपानंननुसे
वनीयं।।समस्तमोहांतकमग्निदायिकासापहारिश्व
सनापहारि।।९।।शुक्रस्यदार्ढ्यप्रविधानदक्षंप्रमत्त
नारीसुखदानबीजं।।इदंहितत्वंजटिलस्यसेवांविधा
यवैद्येनमयाप्रलब्धं।।१०।।

टीका

शुद्धवंग।शुद्धताम्र।दोनोसमभागलेनाऔरदोनोकेस
मलवणलेना।तीनोकोपरईकेसंपुटमेरखकोसंधिले
पकरकोगजपुटमेदाहकरनेसेसुंदरभस्महोताहै।वह
भस्मअनुपानयोजनाकरको देनेसेसर्वप्रमेहदूरहोते
है।अग्निप्रदीप्तहोताहै।कास।श्वासजाताहै।शुक्रदृढ
होताहै।औररमणीकोअत्यंतसुखदेनेमेयही।कारणहो
ताहै।यहवस्तूएकजटाधारीसिद्धपुरुषमेहमनेसेवाक

रकोसंग्रहकियाहै॥ ८॥ ९॥ १०॥

पौष्टिकप्रयोग

शतावरीनागबलात्मगुप्तेक्षुरश्वदंष्ट्रातिलमाषचूर्णं॥ पयःसिताढ्यंनिशितेनपेयंकांताशतंयस्यगृहेविभाति॥ ११॥ द्राक्षाचंदनकुष्टकेसरतुगाक्षीरंचजातीफलंकंकोलंचपुनर्नवामुसलयाधात्र्याश्वगंधान्वितं॥ एतेषांसमभागिकंसमसितंसर्पिर्युतंखादयेद्धातुक्षैण्यबलक्षयाश्मरिरुजोपित्तास्रजंभ्रामकं॥ १२॥

टीका

सतावर। नागबला। केवाचबीज। तालमखाना। असगंध। तिल। उउदी। इन्सभवस्तूका चूर्णकरकेदूधमिस्त्रीकेसाथखाना। जिस्केघरमेसौऔरतहोयउन्होने रातकोयहऔषधखाना॥ ११॥ दाख। चंदन। कुष्ट। नागकेसर। बंसलोचन। जायफल। कंकोल। गदहपूर्ना। सफेदमुसरी। अवरा। असगंध। यहऔषधीसमभागलेके चूर्णकरनासबऔषधीकेसममिस्त्रीमिलायकेखानेसे धातुक्षीण। शक्तिक्षय। अश्मरी। रक्तपित्तसेजोभ्रमहोताहैसोसबदूरहोयकेपुरुषहुसियारहोताहै॥ १२॥

मूलम्

एलामांसिलवंगनागरकणासुक्ताहिमंधान्यकंखर्जूरंचतमालपत्रमधुकाशीरद्वयंदाडिमं॥ हिक्काकामलपांडुरोगनिचयंमूत्रेचदाहोष्मतांमेहान्विंशतिनाशयेच्चसततंप्रीतिप्रदंबृंहणं॥ १३॥

टीका

छोटीलायची। जटामासी। लवंग। सोंठ। पीपर। नागरमोथा। चंदन। धनियां। छोहारा। तमालपत्र। ज्येठीमद। दोनोखस। अनारका छिकुला। इन्ह सभौंका चूर्णकरको अनुपानका योजना करको खानेसे हुचकी। कंवल। पांडुरोग। पिसाबमेजलनाकउकहोना। बीसाप्रकारकाप्रमेह इत्यादिरोगोंका नाशहोताहै और धातुपुष्टीहोयको आनंदहोताहै॥ २३॥

स्तंभनयोग

मंदामंत्रितभास्करात्हतरवेःकार्पासवर्त्याकृतस्यैरंडोद्भवैतैलदीपितरुचेर्दीपस्ययावत्स्थितिः॥ तावत्तेमनुजाःसुखेन सुरतंकुर्वंतुवृष्येभृताःकांताभिर्मदमत्तदंतिगतिभिःकामादिकप्रौढिभिः॥ २४

टीका

रतिवर्धकदीप॥ ॥सनीचरकोमदारकेरूईकोनिमंत्रण करको अतवारको रूई लेना फेर उस्की बत्ती बनायको रेंडके तेलमे बत्ती बारना सुरतकालमो जबतक दियाबरेगा तबतक मैथुनसामर्थ्य रहेगा॥ २४॥

द्रावणयोग

रसेनसम्यक्मरहट्टिकाया घृष्टेनसूतेनसमाक्षिकेण॥ विलिप्तलिंगोरमतेययासामदोद्धतापिद्रवतामुपैति॥ २५॥

टीका

मरहटीकेरसमोपारा सहतदेको खलकरको लिंगपरलेपकरेना मैथुनकरनेसे मदकरको उद्धत भी औरत होयतो भी द्रवहोजाय॥ २५॥

मेदोरोगचिकित्सा

व्योषाग्निमंथत्रिफलाविडंगैःसमंपुरंयोभजतेमनुष्यः॥ मेदोमरुत्श्लेष्मजघोररोग्मस्तस्याशुसर्वेविलयंप्रयांति ॥२६॥

टीका

गुटिका॥ ॥सोंठ।मिरिच।पीपर।अरणी।हरा।बहेडा ।अवरा।बा।बिडंग।इनऔषधीकेबरोबरशोधितगुगु लमिलायकोतीनतीनमासेकीगोलीबांधना।वहगो लीखानेसेमेद।वायू।कफइनसेहोनेवालेजोभयंकर रोगसोनष्टहोतेहैं॥२६॥

उदरचिकित्सा

चूर्णसखेलवणरामठयोःसमानंगोमूत्रमिश्रितमिदंपि बतांनराणां॥नानाविधानिजठराणिलयंप्रयांतिगंगो दकप्रपिबतामिवपातकानि॥२७॥

टीका

सामरनोन।हींग।दोनोकाचूर्णकरको दोनोकेबराबर गोमूत्रमेमिलायकोपीजानेसे नानाप्रकारकेउदररोग नाशकोप्राप्तहोतेहैं।गंगोदकपीनेसेजैसेमनुष्यकेपा तकदूरहोतेहैं॥२७॥

शोफोदरचिकित्सा

पुनर्नवादारुमहौषधांबुगोमूत्रसिद्धंश्वयथुंनिहंति तथाकणशुंठिगुडोत्थचूर्णंशोफामशूलघ्नमजीर्णहा रि॥२८॥गवांक्षीरंवरामिश्रंशोफोदरविनाशनं।गोमू त्रेणसमायुक्तंमहीषीणांपयोथवा॥२९॥

टीका

गदहपूर्ना। देवदारु। सोंठ। खस। यह औषधोंका काढा गोमूत्रमें करके पीनेसे सूज़ जातीहै। तथा पीपर। सोंठ। यह दोनोंका चूर्ण करके गुडमे मिलायके खानेसे भी सूज। आमशूल। अजीर्णादिक दूर होते हैं। और त्रिफलाका चूर्ण गौके दूधमे पीवे तो शोफोदर जाताहै। और भैंसदूध गोमूत्रके साथ पीनेसे भी उक्तरोग जाताहै ॥१८॥१९॥

अंडवृद्धिचिकित्सा

हरतिरुबुकतैलं दुग्धयुक्तं निपीतं वृषणजनितपीडां नात्र शंका विधेया॥ यवतिलऋतुजन्मैरंडबीजैः सुखोष्णैर्हरति कृतविलेपः कांजिकेन प्रपिष्टैः॥२०॥

टीका

रेंडीका तैल दूधमे मिलायके पीनेसे अंडसंबंधी पीडा दूर होती है। और जव। तिल। ऋतुजन्मा। रेंडीका बीज। इनको कांजीमे पीसके उष्ण करके वृषणपर लेप करनेसे वृषणसंबंधी पीडा दूर होती है॥२०॥

गंडमालाचिकित्सा

सविश्वस्य चूर्णस्य तु कांचनारत्वचः कषायस्य निषेवणेन॥ पलायते सा किल गंडमाला यथा मृगी व्याधविलोकनेन॥२१॥

टीका

कचनारके छालका कषाय करके सोंठका चूर्ण उसमें डालके पीनेसे गंडमाला नष्ट होती है। जैसे व्याधके देखनेसे हरिण भागते हैं तैसा गंडमाला रोग इसके सेवनसे दूर होती है॥२१॥

मूलं सितायागिरिकर्णिकायामूलं विशालाभवमु
ग्रगंधा॥ गोमूत्रपिष्टत्रितयस्यलेपोत्सोपद्रवागच्छ
तिगंडमाला॥ २२॥

टीका

सफेदकौआटोटीकामूल। इंद्रवारुणीमूल। घोडाब
च। यहतीनोगोमूत्रमेघसकोलेयकरनेसेउपद्रवस
हितगंडमालादूरहोतीहै॥ २२॥

श्लीपदचिकित्सा

गोमूत्रेणनिशाचूर्णसगुडंयःपिबेत्सखे॥ वर्षोत्थंश्लीपदंत
स्यदद्रुकुष्टंचनश्यति॥ २३॥

टीका

हरदीकाचूर्णऔरगुडयहगोमूत्रमेमिलायकोपीजायतोए
कवर्षकाश्लीपदरोगनष्टहोताहै। औरदादकोढयहभीइ
सीसेदूरहोतेहै॥ २३॥

विद्रधिचिकित्सा

विद्रधौरुधिरमोक्षणंहितंपंचवल्कलघृतैश्चलेपनं॥ शि
ग्रुमूलजरजोंतरुत्थितेविद्रधौमधुयुतंप्रशस्यते॥ २४॥

टीका

विद्रधिरोगमेरुधिरनिकालनाहितहै। औरउस्केऊपरपंच
वल्कलघृतलगावना। सोभांजनकेमूलकेअंतर्छालकार
सनिकालकोसहतमिलायकोपीना इस्सेविद्रधिरोगदूर
होताहै॥ २४॥

व्रणभगंदरचिकित्सा

पुष्पयुक्तत्रिफलाकषायेहितोनराणां ... ीडितेषु

आभाववाव्योषसमःपुरस्तु भग्नस्य संधानकर प्रदिष्टः॥२५

टीका

त्रिफलाका कषाय करके उसमें गुगुल देके पीनेसे उक्तरोग दूर होता है॥ जामुनकी छाल। त्रिफला। सोंठ। मिरिच। पीपल। सब के बरोबर गुगुल मिलायके गोली बाँधके अनुपान योजना करके देनेसे उक्तरोग दूर होता है॥२५॥

नाडीव्रणभगंदरचिकित्सा

फलत्रिकव्योषसमःपुरस्तु घृतेन नाडीव्रणरोगहारी॥ भगंदरे प्राक्रुधिरस्य मोक्षस्ततो व्रणोक्तो विधिरेषयुक्तः॥२६॥

टीका

त्रिफला। सोंठ। मिरिच। पीपर। सबके बरोबर गुगुल मिलायके घृतके साथ खानेसे नाडीव्रण दूर होता है। भगंदररोगको प्रथम रक्तमोक्षण करके फेर व्रणचिकित्सा करना॥

उपदंशशुक्रदोषचि०

मोचारसंपूगविभूतिकांचकोलत्वचं निर्मलशंखजीरं॥ पिष्ट्वोपदंशे खलु निक्षिपेत त्र्यहेण रोगं सकलं निहंति॥२७॥

टीका

मोचरस। सुपारी काकोयला। बेरकी छाल। सपेद संख जीरा। इनका चूर्ण करके चट्टेपर बैठाय देनेसे तीन दिनमे रोग दूर होगा॥२७॥

मूलम्

आदित्यमूलदरदाल्लकधूमदानात्तस्यातुं विभेत्ति सक

लाप्युपदंशपीडा॥श्वश्रूजनैर्बहुतरं परिबोधितापि लघ्वीयथाप्रियतमारमणेनरंतुं॥ २८॥ ह्यमारूजटालेपादुपदंशोविनश्यति॥ शूकदोषोप्यसृङ्मोक्षो जलौकाभिः प्रशस्यते॥२९॥

टीका

रूईकामूल।दरद।अकलकरा।यहतीनोचिलमपररख कोधूँआखीचनेसेउपदंशजन्यपीडाभयभीतहोतीहै॥ जैसीछोटीपतोहूकोपतीकेअंतःपुरमेजानेकेवास्तेसास बहुतसिखावतीहैतोभीवहडरतीहैतैसीउपदंशपीडाइस्केपासनहीआवती॥२८॥औरकनैलजडकेलेपसे भीउपदंशदूरहोताहै।शूकरोगपरजलौकासेरक्तमोक्षणकरनाप्रशस्तहै।शिश्नवृद्ध्यर्थउपायतज्जनितरोग कोशूकरोगकहतेहैं॥२९॥

कुष्ठचिकित्सा

पीत्वासदुग्धंशुचिगंधचूर्णंकुष्ठावलीचंचलतांबिभर्ति॥चकोरनेत्रांकुशपद्मकोशंदृष्ट्वानराणामिवचित्तवृत्तिः॥३०॥गंधंसूतंशिलालोमरिचमपिनिशायुग्मसिंदूरतुत्थादद्रुघ्नोवाकुचीतज्जरणयुगमिदंनिंबुतोयान्यसुक्तं॥ लोहेलौहेनमर्द्यंप्रहरमितमथोहंतिमाहेश्वराख्यंदद्रुंकंडुंचपामोहरइवपटलींसंस्मृतापातकानां॥३१॥मूलेसितोयागिरिकर्णिकायाजलेनपिष्ट्वाकुरुतेप्रलेपं॥सुश्वेतकुष्ठंकिलनस्यगंतुंमासात्प्रयत्नंकुरुतेनितांतं॥३२॥

टीका

गंधकशुद्धकरकोउस्काचूर्णकरकोदूधमेपीनेसेकुष्ठरो

गनष्टहोताहै। चकोरनेत्रास्त्रीकेस्तनकमलदेखनेसे कामुकपुरुषोंकी चित्तवृत्तीनुष्टहोतीहैं तैसे॥३०॥ ॥ माहेश्वरदद्रु॥ ॥गंधक।पारा।मेनसील।हरताल।कारीमिरिच।हलदी।दारुहलदी।सेदुर।तूतिया।चकौडकाबीज।बाकुची।सफेदजीरा।स्याहजीरा।सबका चूर्णकरकेनीबूकेरसमोखलकरना।फेरघृतमिलायकेलोहेकेकढाईमेलोहबटासेप्रहर १ तकखलकरना फेरइस्कोदेहमेलगानेसेखजू।कंडू।दाद नष्टहोतीहैं। जैसेरुद्रकेस्मरणसेपातकसमुदायनष्टहोताहै॥३१॥सफेदकीआटोटीकामूल।जलमेघसकोलेपकरनेसेसफेदकुष्टनष्टहोताहैएकमहिनामे॥३२॥

उदर्दकोढचिकित्सा

गुडेनदीप्यं भजतेनरोयःपथ्येनयुक्तःकिलसप्तरात्रं॥ उदर्दकोढोविलयंप्रयांति नरस्यतस्यापिनकापिशंका॥३३॥

टीका

अजवाईन।गुडमेमिलायकोखानेसेउदर्दकोढरोगसातदिनमेदूरहोताहै पथ्यसेरहना॥३३॥

आम्लपित्तचिकित्सा

भूनिंबनिंबत्रिफलापटोलवासामृतापर्पटमार्कवाणाम् कषायकोमाक्षिकसंप्रयुक्तो निहंतिसोपद्रव माम्लपित्तम्॥३४॥

टीका

चिराईतानीबकीछाल।त्रिफला।पटोलप्रसिद्धहै।अडूसा

गुडुच । पित्तपापडा । भंगरैया । इन्का कषाय करको सहत देकोपीनेसे उपद्रवसहित अम्लपित्त नष्ट होगा ॥ ३४ ॥

विसर्पचिकित्सा

पिचुमंदपटोलतोयदानांक्वथितंसप्तदिनंसखेपिबत्वं। अलसंकुरुमात्रमंदबुद्धेयदितेसर्वविसर्पनाशनेच्छा॥ ३५॥ निशाद्वयंव्याघ्रिशिरीषमांसीयष्टीनतैलाजलचंदनाज्यैः॥ दशांगलेपोज्वरशोफकुष्टंसर्पश्चपंकेपनजातवेदाः॥ ३६॥
ति

टीका

नीबकी छाल। पटोल। नागरमोथा। इन्का कषाय करको सात दिन लेनेसे विसर्परोग दूर होताहै॥ ३५॥ और दोनो हलदी। भटकटैया। सरसो। जटामासी। ज्येठीमद। तगर। लायची दाना। खस। चंदन आज्य इन्का चूर्ण करको घृतमो लेप करना इस्से ज्वर। शोफ। कुष्ट। दूर होताहै। जैसी आग सूखी लकडीको जलावताहै तैसा यह लेप उक्त रोगको दूर करताहै॥ ३६॥

विस्फोटकचिकित्सा

कीर्तनं शीतलादेवीस्तोत्रमंत्रस्ययत्नतम्॥ इदमेवौषधंमुख्यंविस्फोटकविनाशनं॥ ३७॥

टीका

शीतलादेवीका स्तोत्र अथवा मंत्र जप करना यही मुख्य औषध है॥ ३७॥

मसूरिकाचिकित्सा

पटोलतिक्तावृषनिंबमुस्ताच्छिन्नारजोयासकिरातका

नाम्॥ आमांमसूरींशमयेच्चपक्कांविशोधयेत्सत्यमयं कषायः॥३८॥

टीका

कडुपटोल। कुटकी। अडूसा। कडुनीब। नागरमोथा। गुडुचे। पित्तपापडा। धमासा। चिराइता इन्का कषायपीने से उक्तरोग दूर होता है॥३८॥

क्षुद्ररोगचिकित्सा

क्षुद्ररोगेषुसर्वेषुक्षुद्ररोगंचिकित्सितं॥ चिकित्सकाः प्रकुर्वंतुसुगमत्वादुपेक्षितं॥३९॥

टीका

वैद्योनेसंपूर्णक्षुद्ररोगोंको दोषानुसारकरको चिकित्सा करनासुलभहै इसलियेहमनेइसग्रंथमेपृथक्चिकित्सानहीलिखा॥३९॥

मुखरोगचिकित्सा

द्रासीदार्वीयासपथ्याऽक्षधात्रीछिन्नाजातीपल्लवानांकषायः॥क्षौद्रोद्दिक्तोहंतिगंडूषयुक्त्यापातुंवक्रांभोजसंस्थंमहांतम्॥४०॥

टीका

दाख। दारुहरदी। धमासा। छोटीहरे। बहेडा। अवरा। गुडुचा। चमेलीकापत्ता। इन्का काढा करको सहत देको उसकषायसे कुल्ला करने से मुखके फोडे वगैरे सब नष्ट होवेगे॥४०॥

गलरोगचिकित्सा

पाठाविशा दारुकलिंगमुस्ता तिक्ताकषायंमधुसंप्रयु

ऽं॥ गोमूत्रसिद्धंमनुजाःपिबंतुगलोद्भवव्याधिषुसब
जेषु॥४१॥ टीका

पाठाप्र। अतिविख। दारुहरदी॥ इंद्रजव। नागरमोथा। कु
टकी। इन्काकाढा गोमूत्रमेसिद्धकरकोसहतदेकोपी
नेसेगलरोगसंपूर्णदूरहोताहै॥४१॥

दंतरोगचिकित्सा

आढक्यादलमध्यगान्सुमतिमान्भल्लातकान्मृन्म
येपात्रेस्थाप्यविधायपावकधमःप्रज्वालयेद्युक्तितः
तद्भूत्याखिलदंतघर्षणमिदंकुर्वंतुलोकाःसदायोगो
यंकिलदंतरोगमदमृन्मत्तेभकंठीरवः॥४२॥

टीका

मट्टीकेपात्रमोकवडीकेटुकडेबिछायकोउसपरभि
लावारखकोनीचेसेआंचदेनाजवभुंजजायतवउ
सीराखीसेदांतघंसना इस्सेसबदंतकारोगजाताहै।
यहयोगरोगरूपगजकोसिंहकेनाईजानना॥४२॥

कर्णरोगचिकित्सा

पक्कोयस्मिन्वृश्चिकःप्राणहीनःकर्णेतैलंतत्सखेपूर
यत्वं॥ एतत्तैलस्पर्शमात्रेणसत्यंसद्योनाशंकर्णरोगाः
प्रयांति॥४३॥

टीका

वृश्चिकतैलकर्णमेदेनेसेतत्कालकर्णरोगजाताहै॥४३

नासारोगचिकित्सा

विडंगसशीसुरदारुसिंधुकटुत्रिकैःसाधितमाशुतैलं

नासामयघ्नं कथितं मुनीन्द्रैः सर्वेत्वमेतत्कुरु शीघ्रमेव ॥४४॥ दाडिमीकुसुमतोयनावनं नासिकास्रमपहन्ति सत्वरं॥ माषपिष्टकदुकूलभूतिका लेपनं हि शिरसो हितावहं॥४५॥

टीका

बाबिडंग। ज्येठीमद। देवदार। सेंधा। सौंठ। मिरिच। पीपर। इन्का कषाय करको उस्से तैल तैयार करको उस तेलका नस्य लेनेसे नासारोग नष्ट होताहै॥४४॥ अनारके फूलका रस निकालको नाकमो डालनेसे नासिकासे रक्त गिरता होय तो बंद होय। उसी तरेसे उडदीका पिसान। और पीतांबरकी राखी जलमे मिलायको माथेको लेप करनेसे भी हितावह होताहै॥४५॥

नेत्ररोगचिकित्सा

शिग्रुपल्लवरसः समाक्षिको हन्ति सर्वनयनामयांस्तथा॥ गैरिकांजनहरीतकीपटुर्दार्विकाभवविलेपनं बहिः॥४६॥

टीका

लेप॥ ॥सोभांजनके पत्तेका रस निकालके उस्मे सहत मिलायको नेत्रमो लगावना उस्से नेत्ररोग सब दूर होगा और गेरु। सुरमा। हरा ।सेंधा। दारुहरदी। यह औषधी जलमो घंसको नेत्रके बाहेर से लेप करना। इस्से सब नेत्ररोग दूर होतेहै॥४६॥

मूलम्

कृष्णाचिंचीतथाचीणांबीजैस्त्रिंडैकभागिकैः[illegible]र्ति

नेत्रांजिताहंतिप्रकोपंदारुणंदृशोः॥४७॥

टीका

छोटीहरे १ बहेडा १ अंवरा १ इनकाचूर्णकरकोगोली करनावहपानीमेघसकोनेत्रमेअंजनकरनेसेनेत्रका दर्दजाताहै॥४७॥

मूलम्

रसकंसैंधवंतुत्थंटंकणंकटुकत्रयं॥मर्दयेन्निंबुनीरेण वटीछायावशोषिता॥४८॥अंजितामधुनानेत्रेनेत्ररोग विनाशिनी॥रूक्षत्वमर्बुदंपुष्पंदुर्मांसंतिमिरार्जुने॥४९॥ पटलंनेत्रवातंचकाचबिंदूदकांनिच॥अन्यानपिमहारो गान्नाशयेद्रसकेश्वरः॥५०॥

टीका

रसकेश्वरवटी॥ ॥खपरिया।सेंधा।तूतिया।सोहागा।सोंठ।मिरिच।पीपर।यहऔषधवस्त्रगालितकरकोनींबूके रसमेखलकरनाफेरउसकीगोलीबाधनावहगोलीछाया शुष्ककरनाफेरसहतमेघसकोअंजनकरनेसेसवनेत्र रोगदूरहोताहै॥४८॥४९॥५०॥

शिरोरोगचिकित्सा

छिन्नाकिराततत्रिफलात्रियामानिंबाकषायोगुडसंप्रयुक्तः॥शिरःशिरोर्द्धश्रवणाक्षिदंतभ्रूशंखशूलानिनिहंतिसद्यः॥५१॥सूर्यावर्तद्विजपातशुक्रनक्तांध्यचक्षुपटलानिचैव॥नस्यंतुगुंजाभवमूलकस्यशिरोर्द्धशूलं किलरामवाणः॥५२॥एरंडमूलौषधशिग्रुमूलपटोल पाठामयदद्रुनिग्नैः॥धान्याम्लपिष्टैर्विहितःप्रलेपःसंप्र

र्णमूर्धामयकालरात्रिः॥५२॥ ॥इतिश्रीवैद्यामृतेतृतीयोलंकारः॥३॥ ॥

टीका

गुडुच।चिरायता।त्रिफला।हरदी।कुटकी।इन्काकषायकरकेउसमेगुड देकेपीनेसे मस्तकशूल।अर्धसीसी।कर्णशूल।नेत्रशूल।दंतशूल।भृकुटीशूल।गंडशूलसव नष्टहोताहै।औरसूर्यावर्तादिसर्वरोगदूरहोतेहैं।औरयुंज्ञामूलजलमेघसकेनस्यदेनेसेअर्धसीसीदूरहोतीहै यहरामबाणऔषधहै।एरंडमूल।सोंठ।सोभांजनमूल।पटोलपाठा।कुटा।चकौंड।यहऔषधकोजीमेघसकेमस्तकमे लेपकरनेसेमस्तककेरोगसबदूरहोतेहैं।५१।५२।५३॥ ॥इतिश्रीवैद्यामृते भाषाटीकायांतृतीयोलंकारः॥३॥

स्त्रीरोगचिकित्सा

वृषदारुनिशाकिरातभल्लीरसजांभोधरबिल्वजःकषायः॥मधुनामधुरीकृतोनिहंतिविविधानिप्रदराणिकामिनीनाम्॥१॥

टीका

अडूसेकापत्ता।दारुहरदी।चिरायता।भिलांवा।रसांजन।नागरमोथा।बेलकागूदा।इन्काकषायकरकेउसमेसहतडालकेपीनेसेस्त्रियोकेनानाप्रकारकाप्रदररोगनष्टहोताहै॥१॥

मूलम्

दुग्धप्रयुक्ताखुपुरीषपानादसृग्दरंतिष्ठतिनैवसत्यं॥कंदर्पहृपेपिनितांतषंढेकांतेयथामानसमंगनानां॥२॥

मूसेकी लेंडी। दूधमें छानकोपीनेसे रक्तप्रदरनिश्चयकरकोनहीरहताहै। जैसारूपवानकंदर्पकेनाईयद्यपिपति है और नपुंसकहोनेसे रमणीका मनउसपररहता नही तैसा॥२॥

मूलम्

विषुषाघृतसंयुता मृगाक्षी प्रदरं शूलयुतं निराकरोति प्रथमे सुरते यथा नवोढा प्रियहस्तं बतनी विषुप्रयुक्तम् ॥३॥

टीका

विषुषाके पत्ते का चूर्ण करको घृतमें मिलायको खानेसे शूलयुक्त प्रदर जाता है। नवीनस्त्री प्रथमसुरतमें नीवि पर हाथ रखनेसे भर्ताका हाथ जैसा दूर कर्ती है तैसा यह औषध प्रदरको दूर कर्ती है॥३॥

मूलम्

वंध्या प्रियानैव सुखाय यस्माद्दूदामितासां कमपि प्रयोगं॥ पलाशबीजस्य मषी जलेन पीत्वासगर्भा ललना भवंति॥४॥

टीका

वंध्या स्त्रीके मैथुनसे सुखप्राप्त होता नही इसलिये उनकेवास्ते वंध्यात्वनिवारक औषध कहते हैं। पलासकेबीयाकी राखी जलके साथ पीनेसे औरत गर्भिणी होती है ॥४॥

मूलम्

पीत्वा[illegible]दुलतोयेन तंदुलीयजटां [illegible]तौ। [illegible]भोच्या

नारीस्थिरगर्भाप्रजायते॥५॥

टीका

गर्भस्थिरीकरण॥ ॥जिसस्त्रीकोगर्भठहरतानहीइसलि येऋतुकालमेचाउरकेधोवनमेचौराईकीजउपीसको पीनेसेगर्भस्थिररहेगागिरेगानही॥५॥

मूलम्

मनोरमायाःकिलगर्भवत्याःरक्तंस्रवेच्चेद्बहुलंतुयस्याः॥पारावतीयंसहसापुरीषंतांपाययेत्तंडुलतोयमिश्रम्॥६॥

टीका

जिसस्त्रीकोवारंवाररक्तस्रावहोताहैउसकोकबूतर कीविष्टाचाउरकेधोवनमेपिलानेसेतत्क्षणबंदहोता है॥६॥

मूलम्

शर्करायवतिलैःसमांशकैर्माक्षिकेणसहभक्षितंस्त्रियः॥नास्तिगर्भपतनोद्भवंभयंपापभीतिरिवतीर्थसेवनैः॥७॥

टीका

शर्करा॥जव॥तिल॥यहसमान लेकोचूर्णकरकोसहत सेखिलावनेसेगर्भपतनकाभयनहीरहता॥जैसेतीर्थकेसेवनसेपापकाभयनहीरहतातद्वत्॥७॥

मूलम्

वृषस्यमूलंयदिनाभियोनौप्रलेपितंस्त्रीझटितिप्रसूते॥तथाकेटिस्थःकदलीसकंदोवेगात्प्रसूतिंकुरुते

गनानां॥८॥

टीका

अडूसे का मूल घँसको नाभिपर और योनिपर लेपकरनेसे स्त्री जलदी प्रसूत होतीहै। वैसाही केलाका कंदकटीमे बाधनेसे जलदी प्रसूत होतीहै॥८॥

मूलम्

विडोपकुंचीवृषकोपकुल्यावचोषणग्रंथिकनागराणां॥कल्कःसुखोष्णेन जलेनपीतःशूलानियोनिप्रभवानिहंति॥९॥

टीका

बिड़लवण। स्याहजीरा। अडूसेकी जड़। पीपर। बच। मिरिच। पीपरामूल। सौंठ इन्को कल्क करको ईषदुष्णजलमे पीनेसे योनिशूल दूर होताहै॥९॥

मूलम्

शुंठीरुवुकमूलाभ्यां प्रलेपो भगशूलनुत्॥ तथासंकोचनंचूर्णमृत्स्ना मायफलोद्भवं॥१०॥

टीका

सौंठ। एरंडमूल। यहदोनो जलमों घसको योनीपर लेपकरनेसे योनीसंबंधी शूल दूर होताहै। और फिटकिरि। मायफल दोनोका चूर्णकर को पोटली योनीमे रखनेसे योनिसंकोचन होताहै॥१०॥

मूलम्

मृतप्रिया प्रोषितभर्तृका वा सुखेन सर्वैः सुरतंकरोतु॥ पश्चाद्गगेसैंधव दीर्घ्यतैलैरगर्भदां पोटलिकां दधातु

॥२१॥

टीका

जिस्का पति मृत होय अथवा देशांतर गया होय तो उसऔरतने सुखसे सुरत करको पीछे से सेंधा। अजवाइन। तैल इनकी पोटली करको योनी मे रखने से गर्भधारण नही होगा॥२२॥

मूलम्

जातासगर्भैवयदातदासागर्भस्यपातंसहसाकरोतु ॥सदुग्धहिंगुंसुफलाशबीजमथीप्रपीत्वानतुगोप्यमेतत्॥२३॥

टीका

जो प्रारब्ध वशसे जारिणीस्त्री सगर्भा भई तो उन्होने हींग। परासबीजकी राखी दूधके साथ पीनेसे गर्भपात होताहै। यहसब औषधी गुप्त रखना॥२३॥

स्तनरोगचिकित्सा

इंद्रवारुणिकामूलं लेपाद्यातिकुचव्यथा॥ तथाकुमारिकाकंदहरिद्रा लेपनादपि॥२३॥

टीका

इंद्रवारुणीका मूल जलमे पीसको स्तनको लेपकरनेसे स्तनपीडा दूर होतीहै। वैसाही घीकुआरका कंद। हरद्री। एकत्रपीसको लेपकरनेसे स्तनव्यथा जातीहै॥२२

मूलम्

विदारिकाकंदरसःसदुग्धःशतावरीवाकुरुतेंगनानां॥ सदुग्धभक्ताशनतत्परीणांपयोधरीप्राच्यपयःसमु

द्रौ॥२४॥

टीका

भूमिकूष्मांडकारस। दूध एकत्रकरकोपीनेसे अथवा सतावरकारसकिंवाचूर्णदूधमेमिलायकोपीनेसे स्तनमेदूधबहुतआवताहै॥ पथ्यदूधभातखाना॥२४॥

बालरोगचिकित्सा

बालकंधातकीरोध्रंबिल्वंचगजपिप्पली॥ मधुमिश्रोक्वाथलेहौबालातीसारनाशनौ॥२५॥

टीका

खस। धायफूल। लोध। बेलकागूदा। गजपीपर। इन्का कषायअथवा चूर्णसहितमिलायकोखानेसेबालकका पेटझरनाबंदहोताहै॥२५॥

मूलम्

कृष्णारुणाशृंगिपयोधराणांसचूर्णितंमाक्षिकसंप्रयुक्तं॥ शिशोर्ज्वरछर्द्यतिसारकासश्वासघ्नमेतत्प्रवदंति सुदाहरंति॥२६॥

टीका

पीपर। मजीठ। काकडासिंगी। नागरमोथा। इन्काचूर्णकरकोसहतमेखिलावनेसेबालकका ज्वर। वमन। अतिसार। खांसी। श्वास। इत्यादिरोगजातेहै॥२६॥

विषचिकित्सा

तुत्थगंधरसराज्रिटंकणैर्वेणितोयपरिमर्दयेदृढे॥ हंत्ययंविषहरोनरांबुनास्थावरंतदनुजंगमंविषम्॥

रसो

टीका

तृतिया। गंधक। पारा। हरदी। सोहागेकी लाई। इन्को खलकरको कूटली की केरसकी भावना देको जोंधरी बराबर गोली बांधना उस्मे से एक गोली नरमूत्रमे देनास्थावरजंगमविषबाधा दूर होती है॥२७॥

विरेचन

हिंगूलटंकणवरात्रिकटूग्रगंधाबाल्हीकदीप्ययुगसैंधववेल्लदंत्याः॥ सर्वैः समो निगदितो जयपालभागः सर्वं तु निंबुसलिलेन विमर्द्यमेतत्॥२८॥ गुंजाप्रमाणवटिकोष्णजलेन गुल्मपांडुक्षयश्वसनकासबलासमेहान्॥ आध्मानशूलगुदजोदरवन्हिमांद्यविष्टंभकुष्टकृमिरुक्प्रभृतीन्निहंति॥२९॥

टीका

हींग। भजित लेना। सोहागेकी लाही। त्रिफला। त्रिकटु। बच। अजवाईन। अजमोदा। सेंधा। बाविडंग। दंतीमूल सबके समान भैंसके गोवरमे शोधित जयपाल लेको सबको नीबूके रसमो खलकरना। फेर गुंजाप्रमाण गोली बांधको एक गोली उष्णोदकके साथ लेनेसे विरेचन होयको गुल्म। पंडुरोग। क्षय। श्वास। खांसी। कफ। प्रमेह। पेटका फूलना। शूल। अर्श। उदर। अग्निमांद्य। मलावरोध। कुष्ट। कृमिरोग इत्यादि रोग नष्ट होते है॥२८॥२९॥

ग्रंथकर्ता प्रार्थना करते हैं

मोरेश्वरेण भिषजा नगरस्थितेन वैद्यामृतं कृतमिदं बहुधा विचार्य॥ वैद्यास्तएव कृपया परिपालयंतु सम्य

कुसनातनविचारविशारदाये॥२०॥अनुभवात्कैतिचिद्गुरोःकतिचशास्त्रभरान्नवमजिताः॥इहमयाभिषजां हितमिच्छता निगदिताःशुचियोगगणाइमे ॥२१॥ भ्रमादशुद्धंगदितंयदिस्याद्दोषोनकश्चिन्ममभावनीयः॥ भूलोकजन्माखिललोकधर्म भ्रांतेःपरंदूषणमेतदस्तु ॥२२॥ भोभोवैद्यसुताःशृणुध्वमधुनासौभाग्यदंकीर्तिदं॥पापक्षालनमंत्रतंत्रविहितंमान्यंमदीयंवचः॥ यूयंसन्मनसाचिकित्सितविधौहित्वादुराशांपरां शंभो विश्वपतेत्वदर्पणमिदंभूयादितिध्यायत॥२३॥हुताशनाकाशरसेंदुयुक्तेसंवत्सरेदुर्मतिनामभाजि॥ वैद्यामृतंनामदधानएषग्रंथस्मरारेःकृपयासमाप॥२४॥ ॥ ॥इतिश्रीवैद्यामृतेचतुर्थोलंकारः॥४॥ ॥ ॥

टीका

नगरशहरमेरहनेवालेऐसेजोहममोरेश्वरनामकवैद्यहैहमनेबहुतकालविचारकरकोवैद्यामृतनामकग्रंथरचनाकिया।जोवैद्यचरकादिग्रंथकाविचारकरनेमेसमर्थहैउन्होनेकृपाकरकोइसग्रंथकोसंग्रहकरकोपालनइसग्रंथकाकरैं॥२०॥इसग्रंथमोकितनेएकयोगअनुभविक।कितनेएकगुरुसांप्रदायिक।औरकइएकशास्त्रीययोगवैद्योकेहितार्थकहाहैं॥२१॥जोकदाचितभ्रमसेअशुद्धपजाहोयतोमहानलोगोनेउसदोषकोमनमेनरखना।इसभूलोकमेप्राणिमात्रकोभ्रांतियहभीधर्महैइसलियेजहाँअशुद्धहोयवहाँशुद्धकरैं॥२२॥अबऔरभीवैद्योकोनीतिपूर्वकप्रार्थना

करतेहै। हेवैद्यलोगों तुमलोगचिकित्साकालमोहु
राशाकोदूरकरको हेविश्वपतेशंभोपहजोकरतेहैसो
सवतुमकोअर्पणहै। ऐसीशिवकीप्रार्थनाकरकोचि
कित्साकरनेसेसर्वमनोरथतुमारापूर्णहोगा। यहहमा
रावाक्यकीर्तिदपापनाशकसौभाग्यदायकहैऐसा
जानना॥२३॥ यहवैद्यामृतग्रंथ शाके १६०२मेशिवकृ
पासेसमाप्तभयाहैसोजाननाइतिशिवम्॥ ॥इतिश्री
कर्केरेइत्युपनामकरमानाथविरचितायांवैद्यामृत
भाषाटीकायांचतुर्थोलंकारः॥४॥ ॥ ॥ ॥
वाराणसीप्रसादस्यनियोगेनतुयत्नतः॥काशीसंस्कृ
तमुद्रायामङ्कितेयंविचक्षणैः॥१॥काश्यांत्रिपुरभै
रवीसन्निधौश्रीरघुनाथबाबूकृतहनारायणसिंहजी
त्यभिधाप्रजोनिकेतनेमुद्रितेयम् ॥फाल्गुनशुक्ल
द्वादश्यांसमाप्तेयम्॥ सम्वत् १९२४ ॥शिवम्॥